



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 218]

नई दिल्ली, सोमवार, जून 15, 2009/ज्येष्ठ 25, 1931

No. 218]

NEW DELHI, MONDAY, JUNE 15, 2009/JYAISTHA 25, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 जून, 2009

प्रारंभिक जाँच परिणाम

विषय : ओमान, सऊदी अरब और सिंगापुर के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित पोलीप्रोपीलीन के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच।

सं. 14/5/2009-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, (जिसे एतदपश्चात् पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

2. इस जाँच में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:—

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें ओमान, सऊदी अरब और सिंगापुर (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमोपोलीमर्स और प्रोपीलीन तथा एथीलीन को कोपोलीमर्स) (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- (ii) प्राधिकारी ने संबंधित नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जाँच की शुरुआत से पहले भारत में स्थित संबद्ध देश के उच्चायोगों/दूतावासों को पाटनरोधी जाँच के आवेदन की प्राप्ति के बारे में सूचित किया था;
- (iii) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर दिनांक 24 फरवरी, 2009 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई तथा जिसके तहत नियमावली के उप-नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमोपोलीमर्स और प्रोपीलीन तथा एथीलीन को कोपोलीमर्स) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच की शुरुआत की गई थी ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

- iv निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 24 फरवरी, 2009 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक-एक प्रति भारत में स्थित संबद्ध देश के उच्चायोगों/दूतावासों, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार घरेलू उद्योग के ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को भेजी थीं और उनसे जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था।
- v कुछ हितबद्ध पक्षकारों से प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करने की समय-सीमा बढ़ाने संबंधी अनुरोध प्राप्त हुए थे। प्राधिकारी ने समय संबंधी बाधाओं को देखते हुए समय सीमा को बढ़ाया था।
- vi प्राधिकारी ने संबंधित नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और भारत में स्थित संबद्ध देशों के उच्चायोगों/दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय अंश की एक-एक प्रति उपलब्ध कराई थी।
- vii नियम 6(2) के अनुसार भारत में स्थित संबद्ध देशों के उच्चायोगों/दूतावासों को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था और इसी के साथ उनसे यह अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समय सीमा के भीतर देने की सलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक प्रति उन्हें भी ज्ञात निर्यातकों के नामों और पत्रों के साथ भेजी गई थी।
- viii प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों से संगत सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावली भेजी थी:
1. एडवांस्ड पोलिप्रोपीलीन कंपनी, सऊदी अरब
  2. सेबिक बेसिक इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन, सऊदी अरब
  3. टासनी-नेशनल इंडस्ट्रलाइजेशन कंपनी, सऊदी अरब
  4. एक्सोमोबिल केमिकल कंपनी, सिंगापुर 098633
  5. ओमान पोलिप्रोपीलीन एलएलसी, ओमान
- ix जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में संबद्ध देशों से निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने उत्तर दिया है:
1. मै ओमान पोलिप्रोपीलीन एलएलसी, ओमान
  2. मै एडवांस्ड पोलिप्रोपीलीन कंपनी, सऊदी अरब
  3. मै. सऊदी बेसिक इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन, सऊदी अरब (सेबिक)
  4. मै. सऊदी पोलियोल्फिन्स कंपनी, सऊदी अरब
  5. मै. नेशनल पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रलाइजेशन मार्केटिंग कंपनी, सऊदी अरब

6. मै. बसेर इंटरनेशनल एफजैडई, सऊदी अरब
7. मै. एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पेंसिफिक, सिंगापुर
8. मै. इटोचू प्लास्टिक्स पीटीई लि.
9. मै. मरुबेनी केमिकल एशिया पेंसिफिक पीटीई लि., सिंगापुर
10. मै. सुमितोमो केमिकल एशिया पीटीई लि., सिंगापुर
11. मै. सुमितोमो कार्पोरेशन एशिया पीटीई लि., सिंगापुर
12. मै. दि पोलियोल्फिन कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.
13. मै. टोयेटा सूशो (सिंगापुर) पीटीई लि., सिंगापुर

x नियम 6(4) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं से आवश्यक सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावली भेजी गई थी:

1. आर्गनाइजेशन ऑफ प्लास्टिक प्रोसेसर्स ऑफ इंडिया, मुंबई
2. ऑल इंडिया प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, मुंबई
3. ऑल इंडिया प्लैट टेप मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली
4. पी.पी. प्रोडक्ट्स प्रा.लि., कोलकाता
5. ताराज्योत पोलीमर्स लि., कोलकाता
6. आईटीसी लि., कोलकाता
7. पहाड़पुर कूलिंग टॉवर्स लि., कोलकाता
8. टाइम पैकेजिंग लि. मुंबई
9. पेट्रो प्लास्ट इंडस्ट्रीज लिमिटेड, चेन्नई
10. दि सुप्रीम ग्रुप, मुंबई
11. बिग बैग (इंडिया) प्राइवेट लि., बेंगलूर
12. पैरामाउंट कम्यूनिकेशन्स लि., नई दिल्ली
13. पैकेजिंग इंडिया प्रा.लि., चेन्नई
14. फ्लैक्स इंडस्ट्रीज लि., नोएडा
15. बिशन स्वरूप रामकिशन एग्रो, दिल्ली
16. ब्लो पैकेजिंग (इंडिया) लि. चेन्नई
17. चेन्नई पोलीपैक प्रा.लि., चेन्नई
18. हाइड्रो एस एंड एस इंडस्ट्रीज लि., चेन्नई
19. एक्साइड इंडस्ट्रीज लि., कोलकाता
20. पेंटादेईवाहा आटो पार्ट्स लि., चेन्नई
21. वीके पोलीकोट्स लि., नई दिल्ली
22. मेकेनो प्लास्टिक लि., गुडगांव
23. डौ केमिकल इंटरनेशनल, लि. मुंबई
24. हिट्च प्लास्ट लि., मुंबई
25. जनरल कोमोडीटीज प्रा.लि., बेंगलूर
26. बालमर लॉरी वैन लीर लि., मुंबई
27. बैक्स्टर इंडिया, प्रा.लि., गुडगांव

xi इसके उत्तर में निम्नलिखित ने उत्तर दिया है:

1. त्रिचवी एंड पुटोकोटाई डिस्ट्रिक्स प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स, ट्रेडर्स एसो.  
(त्रिपम्मा)
2. मै. पीपी प्रोडक्ट्स प्रा.लि., बेंगलूर
3. मै. राजयोट पोलीमर्स लि., बेंगलूर
4. चेन्नई प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एंड मर्चेन्ट्स एसोसिएशन्स
5. कोयम्बटूर प्लास्टिक्स मैनु एंड ट्रेडर्स एसोसिएशन्स, तमिलनाडु,
6. दि कोयम्बटूर डिस्ट्रिक्स प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन्स
7. प्लाज्मा पॉडी प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एंड मर्चेन्ट एसोसिएशन्स
8. शिवाकाशी प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन्स (सिपमा)
9. त्रिचूर प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसो (टिप्मा)
10. विकी पॉलीकोट्स लिमिटेड, गुडगांव/नई दिल्ली
11. नॉर्थ उड़ीसा चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज,
12. डिंडीगुल जिला पॉलीथीन बैग मैनुफैक्चरर्स
13. डीलर्स वेलफेयर एसो.
14. सलेम प्लास्टिक सेलर्स एंड मैनु एसोसिएशन्स
15. ऑल पांडिचेरी प्लास्टिक्स ट्रेडर्स एंड मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन्स  
(एपीपीटीएमए)
16. मै. कानपुर प्लास्टिक्स, लि
17. मै. जॉली कंटेनर्स, दिल्ली
18. मै. दमन पॉलीफैब्स, इंडिया
19. मै. एस्सल प्रोपैक लि., चेन्नई
20. ऑल इंडिया प्लास्टिक्स मैनु एसोसिएशन (एआईपीएमए)-मुंबई
21. ऑल इंडिया फ्लैट टेप मैनुफैक्चरर्स एसो. (एआईएफटीएमए)-बेंगलूर
22. ऑल इंडिया शेयरिंग्स दक नीडल्स मैनुफैक्चरर्स एसो.
23. इंडियन प्लास्टिक्स फेडरेशन (आईपीएफ)-कोलकाता
24. आर्गनाइजेशन ऑफ प्लास्टिक प्रोसेसर्स ऑफ इंडिया (जीएसपीएमए)-मुंबई,
25. गुजरात स्टेट प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसो. (जीएसपीएमए)-अहमदाबाद,
26. दि तमिलनाडु प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसो. (टीएपीएमए)-चेन्नई
27. आंध्र प्रदेश प्लास्टिक्स मैनुफैक्चरर्स एसो. (एपीपीएमए), हैदराबाद
28. मै. ब्लो पैकेजिंग (इंडिया) लि., इंडिया
29. मै. जम्बो बैग लि., चेन्नई
30. मै. हिटाची प्लास्ट लि., इंडिया

xii वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी निदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के व्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया है।

xiii प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु एक सार्वजनिक फाइल के रूप में खुला रखा था;



- xiv सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर आवेदकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने और बेचने की लागत ज्ञात की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- xv यह जांच 1 अप्रैल, 2008 से शुरू होकर 31 दिसंबर, 2008 तक की अवधि (जिसे एतदपश्चात् जांच अवधि भी कहा गया है) के दौरान की गई थी । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2005-मार्च, 2006, अप्रैल, 2006-मार्च, 2007, अप्रैल, 2007-मार्च, 2008 और जांच अवधि की समयावधि शामिल है । वास्तविक क्षति के खतरे का आकलन करने के लिए जांच अवधि के बाद के आंकड़ों पर भी विचार किया गया है ।
- xvi इस अधिसूचना में \*\*\* चिन्ह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना और नियमों के अनुसार प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को प्रदर्शित करता है ।

## ख. जांच अवधि

### हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

3. यह तर्क दिया गया है कि वर्तमान मामले में जांच अवधि काफी कम है और इसमें वे महीने शामिल हैं जिनके दौरान कच्ची सामग्री की आवाम्जाही और पोलीप्रोपलीन की कीमतें वैश्विक मंदी के कारण त्रुटिपूर्ण रही थीं । उचित और सही विश्लेषण के लिए जांच अवधि 18 महीने की अवधि निर्धारित की जानी चाहिए ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

4. प्राधिकारी ने जांच अवधि के संबद्ध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट किया है और उनका विचार यह है कि वर्तमान मामले में चुनी गई जांच अवधि उचित ढंग से चुनी गई है जिसमें इस विषय के संबंध में सर्वाधिक संगत आंकड़े उपलब्ध हैं ।

## ग. विचाराधीन उत्पाद और घरेलू समान वस्तु

5. विचाराधीन उत्पाद पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमोपोलीमर्स और प्रोपीलीन तथा एथीलीन के कोपोलीमर्स) संबद्ध वस्तु का उपयोग सीमेंट, खाद्यान्न, चीनी, उर्वरक के बुने हुए बोरो और फलों तथा सब्जियों के थैलों, टीक्यू और बीओपीपी फिल्मों, कंटेनरों आदि में किया जाता है ।

5.1 संबद्ध वस्तुओं को सीमाशुल्क शीर्ष 39021000 और 39023000 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है । सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है ।

### हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

- यह तर्क दिया गया है कि इस याचिका में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के उपशीर्ष 39021000 और 39023000 के अंतर्गत यथा वर्गीकृत दो उत्पाद अर्थात् प्रोपीलीन-होमोपोलीमर और प्रोपीलीन कोपोलीमर शामिल हैं और यह कि ये दोनों उत्पाद एक दूसरे से भिन्न-भिन्न हैं। प्रोपीलीन कोपोलीमर, पोलीप्रोपीलीन होमोपोलीमर से \*\*\*% महंगा होता है और तकनीकी दृष्टि से पोलीप्रोपीलीन से अच्छा होता है।
- यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग प्रोपीलीन कोपोलीमर के कतिपय विशिष्ट ग्रेडों का विनिर्माण नहीं कर रहा है और न ही उसके पास उनके विनिर्माण की क्षमता है।

### घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्क

- विचाराधीन उत्पाद: यह तर्क दिया गया है कि चूंकि विचाराधीन उत्पाद में पोलीप्रोपीलीन की सभी किस्में शामिल हैं इसलिए यह तर्क नहीं दिया जा सकता है कि उत्पादों में थोड़े अंतर के कारण भेद किया जा सकता है। जहां तक घरेलू उद्योग का संबंध है, पोलीप्रोपीलीन की दोनों किस्मों की उत्पादन लागत के बीच कोई अंतर नहीं है। यह तर्क दिया गया है कि कीमत में अंतर भी काफी कम अर्थात् लगभग \*\*\* % है। इसके अलावा, आरआईएल में नाप्था और गैस क्रेकर, एथीलीन और प्रोपीलीन को संयुक्त उत्पादों के रूप में मानते हैं। उपर्युक्त के मद्देनजर पोलीप्रोपीलीन के उत्पादन के लिए प्रोपीलीन और एथीलीन की कीमत समान होगी। इस प्रकार पोलीप्रोपीलीन होमोपोलीमर और कोपोलीमर की उत्पादन लागत समान है। घरेलू उद्योग ने आगे यह दावा किया है कि पोलीप्रोपीलीन की दोनों किस्मों के बीच कीमत में अंतर भी काफी कम (\*\*\*% है)। यह भी कहा गया है कि निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के अगोपनीय अंश से यह स्पष्ट नहीं है कि क्या उन्होंने प्रोपीलीन की प्रत्येक किस्म के लिए अलग-अलग सूचना दी है।
- कतिपय ग्रेडों को बाहर रखने के लिए कुछ निर्यातकों द्वारा किए गए दावों के संबंध में घरेलू उद्योग की टिप्पणियां मंगाने के लिए उन्हें एक विशिष्ट पत्र भेजा गया था। घरेलू उद्योग ने यह कहते हुए उत्तर दिया है कि निर्यातकों के दावे निराधार हैं क्योंकि घरेलू उद्योग वस्तुतः उन संबद्ध वस्तु विनिर्देशनों को भी उपलब्ध कराता है जिनके घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित नहीं किए जाने का दावा किया गया है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

- विचाराधीन उत्पाद: प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत करते समय जांच के कार्यक्षेत्र को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया था अर्थात् पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमोपोलीमर्स और प्रोपीलीन तथा एथीलीन के कोपोलीमर्स)। किसी पक्षकार द्वारा इस बात पर विवाद नहीं उठाया गया है कि प्रोपीलीन और एथीलीन के कोपोलीमर पोलीप्रोपीलीन नहीं होते हैं। कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि होमोपोलीमर और कोपोलीमर की कीमतों में अंतर है तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा इन दावों पर प्रश्न उठाया गया है। प्राधिकारी ने दावों और प्रति दावों को नोट किया है और वे यदि ये दावे

सही साबित होते हैं तो उचित तुलना करने के लिए समायोजनों हेतु इस मुद्दे की जांच करेंगे।

- **भारत में विनिर्माण क्षमता का अभाव:** प्राधिकारी नोट करते हैं कि पोलीप्रोपीलीन के कतिपय ग्रेडों को जांच से बाहर रखने के संबंध में किए गए दावों पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रश्न उठाया गया है और इनका खंडन किया गया है। इस विषय पर उन्हें भेजे गए एक पत्र में घरेलू उद्योग ने स्पष्ट रूप से यह कहा है कि वे विनिर्दिष्ट ग्रेडों की संबद्ध वस्तु का वास्तव में उत्पादन करते हैं जिनका निर्यातकों के वक्तव्यों के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्माण नहीं किए जाने का दावा किया गया है। उन्होंने उनके द्वारा विनिर्मित समतुल्य ग्रेडों के ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। तथापि प्राधिकारी जांच की प्रक्रिया के दौरान इस मुद्दे पर विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए दावों और प्रतिदावों की आगे जांच और सत्यापन तथा मौके पर सत्यापन करेंगे।

5.2 समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नानुसार व्यवस्था है: -

*"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो;*

5.3 रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ यह मानते हैं कि संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद के बीच कोई खास अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, कार्य और प्रयोगों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं की दृष्टि से आयातित संबद्ध उत्पाद से तुलनीय है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों का उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर करते हैं।

5.4 इस प्रकार प्राधिकारी का यह विचार है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध विचाराधीन उत्पाद के समान उत्पाद हैं।

#### घ. घरेलू उद्योग का दायरा और स्थिति

6. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

(ख) "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का

सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

6.1 आवेदक के अनुसार देश में समान वस्तु के केवल दो उत्पादक हैं । यह आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. द्वारा दायर किया गया है । अन्य उत्पादक अर्थात् मै. हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लि. ने आवेदन का समर्थन किया है ।

6.2 रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. का उत्पादन समान वस्तु के घरेलू उत्पादन का बड़ा हिस्सा बनता है जो भारतीय उत्पादन के 50% से काफी अधिक है । इस प्रकार यह आवेदन पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) की अपेक्षाओं को पूरा करता है । इसके अलावा, मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. को वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के साथ पठित नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" माना जा रहा है ।

## **ड. गोपनीयता**

### **हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध**

7. यह तर्क दिया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को स्पष्ट रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए कि इस याचिका में मांगा गया गोपनीय व्यवहार सदाशयतापूर्ण और घरेलू उद्योग के अधिकारों से सुसंगत है । याचिका के पठन मात्र से इस बात का संकेत मिलता है कि गोपनीयता का दावा एक अपवाद के बजाए नियम के रूप में किया गया है । यह तर्क दिया गया है कि अनिवार्य व्यौरों को प्रकट किए बिना जांच की शुरुआत नियमों के विरुद्ध है :

### **घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध**

7.2 निर्यातकों ने बिना किसी उचित आधार के अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है । इसके अलावा, गोपनीय अंश में दी गई समस्त सूचना के लिए कोई उचित कारण बताए बिना प्रश्नावली के उत्तर में उनका अगोपनीय अंश प्रस्तुत नहीं किया गया है । इससे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का अर्थ तर्कसंगत ढंग से समझने का पर्याप्त आधार सुलभ नहीं होता है । प्रश्नावली के उत्तर के अगोपनीय अंश से यह स्पष्ट नहीं है कि क्या उन्होंने पोलिप्रोपीलीन की प्रत्येक किस्म के लिए अलग-अलग सूचना प्रस्तुत की है । इस संदर्भ में यह अनुरोध किया जाता है कि सभी निर्यातकों ने आयातों की मात्रा के संबंध में भी गोपनीयता का दावा किया है जो स्वीकार्य नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग को आवेदन के अगोपनीय अंश में भी मात्रा से संबंधित सूचना प्रस्तुत करनी पड़ी है ।

### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

7.3 प्राधिकारी ने उपर्युक्त अनुरोधों को नोट किया है और उनका विचार यह है कि घरेलू उद्योग ने आवेदन के कतिपय हिस्सों के संबंध में गोपनीयता का दावा किया है । ऐसा करते समय

घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी को संतुष्ट करते हुए इस गोपनीयता के कारणों संबंधी एक विवरण के साथ आवेदन का अगोपनीय अंश विधिवत ढंग से प्रस्तुत किया है।

#### घ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

##### सामान्य मूल्य

8. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी जिसमें उन्हें निर्धारित ढंग और पद्धति से सूचना प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी। निम्नलिखित कंपनियों से प्रश्नावली के उत्तर प्राप्त हुए थे।

1. मै. ओमान पोलीप्रोपलीन एलएलसी, ओमान
2. मै. एडवांस पोलीप्रोपलीन कंपनी, सऊदी अरब
3. मै. सऊदी बेसिक इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन, सऊदी अरब (सेबिक)
4. मै. एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पैसेफिक, सऊदी अरब
5. मै. सऊदी पोलियोलेफाइन्स कंपनी, सऊदी अरब
6. मै. एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पैसेफिक, सिंगापुर
7. मै. पोलियोलेफाइन्स कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.
8. मै. इटोचू प्लास्टिक पीटीई लि., सिंगापुर
9. मै. मारुबेनी केमिकल एशिया पैसेफिक पीटीई लि., सिंगापुर
10. मै. सुमिटोमो कार्पोरेशन एशिया पीटीई लि., सिंगापुर
11. मै. टोयोटा टशूशो (सिंगापुर) पीटीई लि., सिंगापुर
12. मै. मित्सुबिशी केमिकल थाइलैंड (कं.) लि.
13. मै. सुमिटोमो केमिकल एशिया पीटीई लि., सिंगापुर

#### हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

9. यह तर्क दिया गया है कि प्राधिकारी को आवेदन में दी गई पाटन की गणना पर विश्वास नहीं करना चाहिए। निर्यातकों ने उचित निर्यात कीमतें प्रभावित की हैं जो समान उत्पाद किस्मों, विनिर्देशनों और गुणवत्ता के लिए वैश्विक और भारतीय कीमतों की तुलना पर हैं। इस प्रकार याचिकाकर्ताओं के पाटन संबंधी आरोप याचिकाकर्ताओं की कल्पनाओं के अनुसार सामान्य मूल्य के परिकलन पर आधारित हैं और पूर्णतः निराधार हैं तथा यह कि प्राधिकारी को इस संबंध में प्रश्नावली के अलग-अलग उत्तरों पर गौर करना चाहिए।

#### सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए अपनाई गई पद्धति

10. चूंकि निम्नलिखित कंपनियों ने प्रश्नावली का उत्तर दिया है इसलिए प्राधिकारी ने इन कंपनियों के संबंध में अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित किया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनाई गई आम पद्धति निम्नानुसार है:

10.1 पहले यह देखा गया था कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा उनके घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्रियां घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए

प्रतिनिधिक और व्यवहार्य हैं और क्या सत्यापन के अधीन प्रतिवादियों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण पूरा होता है। जहां कहीं भी प्रतिवादियों ने उनके घरेलू बाजार में की गई बिक्रियों के सौदावार ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं, वहां इस प्रकार प्रदत्त सूचना पर आगे जांच और सत्यापन के अधीन संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु भरोसा किया गया है।

10.2 अन्य मामलों में निर्यातकों द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत को आगे जांच होने तक जहां व्यवहार्य हो अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है और जहां ऐसा व्यवहार्य नहीं था प्राधिकारी द्वारा अनंतिम आधार पर उपलब्ध तथ्यों के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है।

10.3 प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में यह माना है कि सामान्य मूल्य निर्यातक विशिष्ट नहीं होता है बल्कि निर्यातक देश विशिष्ट होता है। अतः प्राधिकारी ने पहले जहां व्यवहार्य हो, प्रत्येक उत्पादक/निर्यातक के लिए उत्पादक/निर्यातक विशिष्ट कारखाना द्वार सामान्य मूल्य की गणना की है और उसके बाद समग्र रूप से प्रत्येक समग्र देश के लिए भारत औसत सामान्य मूल्य को अलग-अलग निर्धारित किया है और फिर इसकी तुलना प्रत्येक सहयोगी प्रतिवादी की कारखाना द्वार निर्यात प्राप्ति के साथ की गई है।

### ओमान

#### मै. ओमान पोलीप्रोपलीन एल एल सी

10.4 उत्तर को पढ़ा गया था और यह पाया गया था कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर के परिशिष्ट 3 क और 3 ख में भिन्न-भिन्न ग्रेडों के लिए संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत संबंधी ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। तथापि, यह नोट किया गया था कि निर्यातक ने परिशिष्ट 8 में सभी ग्रेडों के लिए केवल एक लागत उपलब्ध कराई है। ग्रेडवार उत्पादन लागत संबंधी आंकड़ों के अभाव में प्राधिकारी ग्रेडवार आधार पर व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण करने में सक्षम नहीं हैं। अतः प्राधिकारी समग्र रूप से संबद्ध वस्तु के लिए एक सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए बाध्य हैं। यह नोट किया गया था कि इस प्रकार निर्धारित भारत औसत घरेलू बिक्री कीमत भारत औसत घरेलू उत्पादन लागत से कम थी; और यह भी नोट किया गया था कि घाटा उठाने वाले सौदे कुल बिक्रियों के 20% से ज्यादा थे; अतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के प्रावधानों के अनुसार लाभप्रद बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण की कार्यवाई की है। सेवा प्रभारों और परिवहन प्रभारों के संबंध में निर्यातक द्वारा दावा किए गए समायोजनों को आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। यह भी कहा गया है कि घरेलू बाजार में बेची गई वस्तुएं भारत को निर्यातित वस्तुओं के समान हैं। यदि कोई अंतर है तो वह ओमान में पेलेटों संबंधी आपूर्ति की गई सामग्री में है जबकि भारत में इनकी आपूर्ति पेलेटों के बिना की गई है। इस प्रकार इनका प्रभाव \*\*\* डॉलर/मी.टन लिया जा सकता है। इस दावे को आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। अतः निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. के रूप में परिकलित किया गया है।

**सऊदी अरब****मै. एडवांस पोलीप्रोपीलीन कंपनी**

10.5 उत्तर को पढ़ा गया था और यह नोट किया गया था कि प्रतिवादी ने घरेलू बाजार में ऑफ स्पेक सामग्री बेची है जबकि भारत को निर्यातित वस्तुएं विभिन्न ग्रेडों की हैं। घरेलू बाजार में बेची गई ऑफ स्पेक सामग्री से संबंधित ब्यौरे परिशिष्ट 1 में उपलब्ध कराए गए हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिवादी ने मई, 2008 से दिसंबर, 2008 तक भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है जबकि उसकी घरेलू बिक्रियां केवल नवंबर और दिसंबर, 2008 की अवधि में की गई हैं। इस तथ्य पर विचार करते हुए कि इस अवधि के दौरान पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतें आम तौर पर और संबद्ध वस्तु की कीमतें काफी अधिक कम हो गई थीं। जब घरेलू बिक्रियां की गई थीं; इसलिए प्रतिवादी द्वारा की गई घरेलू बिक्री सामान्य मूल्य और पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ तुलनीय और प्रतिनिधिक नहीं मानी जा सकती हैं।

अतः प्राधिकारी ने परिशिष्ट 8 में यथाउल्लिखित बनाने और बेचने की इकाई लागत के आधार पर सामान्य मूल्य के परिकलन की कार्रवाई की है और आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन प्रतिवादी द्वारा बताए गए वास्तविक लाभ मार्जिन को जोड़ा है। इस निर्यातक के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. है।

**मै. सऊदी पोलियोलफिन्स कंपनी**

10.6 उत्तर को पढ़ा गया था और यह पाया गया था कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर के संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत संबंधी ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। यह नोट किया गया था कि इस प्रकार निर्धारित भारत औसत घरेलू बिक्री कीमत भारत औसत घरेलू उत्पादन लागत से अधिक थी; और यह भी नोट किया गया था कि घाटा उठाने वाले सौदे कुल बिक्रियों के 20% से कम थे; अतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के उपबंधों के अनुसार कुल घरेलू बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण संबंधी कार्रवाई की है। अंतरदेशीय भाड़े और ऋण लागत के संबंध में निर्यातक द्वारा दावा किए गए समायोजनों को आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। इस प्रकार प्रतिवादी सामान्य मूल्य को \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. के रूप में ज्ञात किया गया है।

**मै. सऊदी बेसिक इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन (सेबिक)**

10.7 निर्यातक के उत्तर को पढ़ा गया और यह नोट किया गया कि सेबिक दो संबंधित सत्ताओं अर्थात् मै. आईबीएन जहीर और मै. यानपेट द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की बिक्री करते हैं। प्रतिवादी ने केवल परिशिष्ट 1 और 2, 3 क और 3ख में ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। अन्य परिशिष्टों अर्थात् परिशिष्ट 4-9 के संबंध में कोई ब्यौरे उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। निर्यातक ने कहा है कि वे 27 अप्रैल, 2009 तक ऊपर उल्लिखित परिशिष्टों में अपेक्षित संपूर्ण ब्यौरे प्रस्तुत कर देंगे; परंतु निर्यातक ने अब तक इन ब्यौरों को प्रस्तुत नहीं किया है। इन परिस्थितियों में चूंकि निर्यातक की उत्पादन लागत के संबंध में रिकॉर्ड में कोई सूचना उपलब्ध नहीं है, इसलिए प्राधिकारी व्यापार की सामान्य प्रक्रिया (ओसीटी) संबंधी परीक्षण करने में असमर्थ हैं।

यह बताया गया था कि वे संबद्ध वस्तुओं को उपर्युक्त दो संबंधित उत्पादकों से खरीदते हैं जिन्होंने इस जांच में सहयोग नहीं किया है। चूंकि प्रतिवादी ने कुछेक परिशिष्टों में कोई सूचना/आंकड़े, ब्यौरेवार लागत संबंधी सूचना प्रस्तुत नहीं किए हैं और संबद्ध वस्तु के उत्पादकों ने जांच में सहयोग नहीं किया है इसलिए प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ प्रतिवादी निर्यातक को असहयोगी मानने के लिए बाध्य हैं।

#### मै. एक्सम मोबिल केमिकल एशिया पैसिफिक, सऊदी अरब

10.8 उत्तर को पढ़ा गया था और यह पाया गया था कि परिशिष्ट-1, 2क, 3क, 3ख और 3ग को छोड़कर घरेलू बिक्रियों के संबंध में सूचना/आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। परिशिष्ट 1 और 3ख घरेलू बिक्रियों के बजाए अन्य देशों को की गई बिक्रियों से संबंधित है। प्रतिवादी द्वारा अन्य संगत सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है। यह बताया गया था कि वे संबद्ध वस्तु को मै. सऊदी यानबू पेट्रोकेमिकल कंपनी (यानपेट) से खरीदते हैं जिसने इस जांच में सहयोग नहीं किया है। चूंकि प्रतिवादी ने ब्यौरेवार लागत संबंधी सूचना समेत कुछ परिशिष्टों में कोई सूचना/आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं और संबद्ध वस्तु के उत्पादक ने जांच में सहयोग नहीं किया है इसलिए प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ प्रतिवादी निर्यातक को असहयोगी मानने के लिए बाध्य हैं।

#### सिंगापुर

#### मै. एक्सम मोबिल केमिकल एशिया पैसिफिक, सिंगापुर

10.9 उत्तर को पढ़ा गया था और यह पाया गया था कि घरेलू बिक्रियों के संबंध में सूचना/आंकड़े नहीं दिए गए हैं। और अन्य बातों के साथ यह बताया गया है कि सिंगापुर में बिक्रियां \*\*\* मी.ट. थीं जबकि भारत को निर्यात \*\*\* मी.ट. थे। अतः चूंकि सिंगापुर में बिक्रियां भारत को किए गए निर्यात के 5% से कम थीं, इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण तीसरे देश की सूचना के आधार पर किया जाएगा। प्राधिकारी ने यह पाया है कि उत्तर में विभिन्न स्थानों पर इस संबंध में प्रदत्त सूचना/आंकड़े एक-दूसरे से असंगत हैं।

10.10 इस संबंध में, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और उसके अंतर्गत बनाई गई पाटनरोधी नियमावली के प्रावधानों का संदर्भ लिया जाता है जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ सामान्य मूल्य के निर्धारण के तौर तरीकों का उल्लेख किया गया है। इन प्रावधानों और हल्दोर टोप्सो मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा की गई इनकी व्याख्या के मद्देनजर; प्राधिकारी का यह विचार है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण का विकल्प चुनने का विवेकाधिकार निर्यातकों के पास नहीं है यदि सामान्य मूल्य घरेलू बिक्रियों के मापदंड पर आधारित नहीं होता है। बजाए इसके ऐसा करने का अधिकार प्राधिकारी के पास है। अतः प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्रतिवादी के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन करने को उपर्युक्त समझा है।

10.11 इसके अलावा, यह भी देखा गया है कि प्रतिवादी ने ब्यौरेवार लागत संबंधी सूचना समेत विभिन्न परिशिष्टों में कोई सार्थक सूचना/आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं। तथापि, विनिर्माण इकाई



लागत के संबंध में सूचना संगत परिशिष्टों में उपलब्ध कराई गई है। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के विनिर्माण के लिए निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन करने की कार्यवाही की है और उसमें \*\*\*% का तर्कसंगत लाभ मार्जिन जोड़ा है और इसकी तुलना परिशिष्ट 3क में प्रदत्त सूचना के साथ की है जिसमें कारखाना द्वार स्तर पर भारत को संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत का उल्लेख किया गया है, यह आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन है। इस प्रकार निर्यातक का सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनता है।

#### मै. पोलियोल्फिन कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.

10.12 उत्तर को पढ़ा गया था और यह नोट किया गया था कि मै. पोलियोल्फिन संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक हैं और उन्होंने भारत को इस वस्तु का सीधे निर्यात नहीं किया है। मै. सुमितोमो कॉर्पोरेशन, मै. टोयोटा सुसो (सिंगापुर) पीटीई लि., मै. मरुबेनी कैमिकल एशिया पैसिफिक पीटीई लि. और मै. इटोचू प्लास्टिक्स पीटीई लि. ने मै. पोलियोल्फिन द्वारा उत्पादित सामान का उत्पादित संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात किया है। इन चार निर्यातकों ने भी निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं।

10.13 प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादक ने परिशिष्ट 8 ख में घरेलू बाजार के लिए कारखाना द्वार लागत के ब्यौरे नहीं दिए हैं। उत्पादक ने लागत संबंधी परिशिष्टों अर्थात् परिशिष्ट 5, 6, 7, 8, 8क, 8ख और 9 में कोई सार्थक सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। संगत आंकड़ों के अभाव में प्राधिकारी व्यापार की सामान्य प्रक्रिया (ओसीटी) संबंधी परीक्षण करने की स्थिति में नहीं है। अतः प्राधिकारी सिंगापुर से अन्य सहयोगी प्रतिवादी के संगत आंकड़ों को आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन अपनाकर उत्पादक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने को बाध्य हैं। इस प्रकार उत्पादक के लिए सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनता है।

#### मै. सुमितोमो कैमिकल एशिया पीटीई लि.

10.14 यह बताया गया है कि जापान की सुमितोमो कैमिकल कंपनी लि. (एससीसी) के पास सुमितोमो कैमिकल एशिया पीटीई लि. (एससीए) का पूरा स्वामित्व है। एससीए सऊदी अरब की रेबिग रिफाइनिंग और पेट्रोकेमिकल कंपनी (पीआरसी) द्वारा उत्पादित रासायनिक उत्पादों (पोलीप्रोपीलीन समेत) की अनन्य वितरक है जिसमें एससीसी का \*\*\*% स्वामित्व है। यह भी बताया गया था कि पोलीप्रोपीलीन को पोलियोल्फिन कंपनी, (सिंगापुर) पीटीई लि. (टीपीसी) से खरीदा जाता है। तथापि, टीपीसी द्वारा उनके अलग उत्तर में किए गए अनुरोधों के अनुसार उन्होंने यह बताया है कि वे भारत में अपने निर्यात को पांच भिन्न-भिन्न व्यापारिक सत्ताओं के माध्यम से संभाल रहे हैं। प्रतिवादी का नाम अर्थात् मै. सुमितोमो कैमिकल एशिया पीटीई लि. उनमें नहीं है।

10.15 निर्यातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि यद्यपि सिंगापुर घरेलू बाजार है, तथापि रिकार्ड की गई बिक्रियां, मात्रा और मूल्य की दृष्टि से काफी कम हैं। अतः उसके बिक्री संबंधी आंकड़े सामान्य मूल्य का उचित आधार नहीं बन पाएंगे। दूसरी ओर चीन के लिए बिक्री संबंधी आंकड़े मात्रा (एससीए की बेची गई कुल मात्रा का लगभग 2 तिहाई) और मूल्य की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है और भारत में एससीए द्वारा की गई बिक्रियों के लिए सामान्य मूल्य की गणना हेतु

आधार के रूप में इनका प्रयोग किया जा सकता है । इसके अलावा, चीन के नौवहन संबंधी नियम भारत के नियमों से तुलनीय हैं ।

10.16 तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सऊदी अरब की मै. रेबिक रिफाइनिंग और पेट्रोकेमिकल कंपनी (पीआरसी) जो उत्पादक हैं, ने जांच में सहयोग नहीं किया है । चूंकि निर्यातक और उत्पादक संबंधित सत्ताएं हैं इसलिए यह निर्धारित करना संभव नहीं है कि दोनों सत्ताओं के बीच सौदों में कोई अंतर है । यह भी नहीं माना जा सकता है कि सुमितोमो केमिकल एशिया पीटीई लि. द्वारा संबद्ध वस्तुओं की खरीद व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई है । चूंकि संबद्ध वस्तु के उत्पादक ने जांच में सहयोग नहीं किया है इसलिए प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ प्रतिवादी निर्यातक को असहयोगी मानने को बाध्य हैं ।

## **छ. निर्यात कीमत**

### **ओमान**

#### **मै. ओमान पोलीप्रोपीलीन एलएलसी**

11. निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है । निर्यातक ने कमीशन, सेवा प्रभार, बीमा, मालभाड़ा और अंतरदेशीय परिवहन के संबंध में समायोजनों का दावा किया है और आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन इन्हें अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने ऋण लागत और बैंक प्रभारों के संबंध में समायोजन का दावा नहीं किया है । तथापि, यद्यपि प्राधिकारी ने इस स्तर पर इन कारकों के संबंध में कोई समायोजन नहीं किया है, परंतु वे जांच की प्रक्रिया के दौरान इन पहलुओं की जांच करेंगे । इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है ।

### **सऊदी अरब**

#### **मै. एडवांस्ड पोलीप्रोपीलीन कंपनी**

11.1 निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है । निर्यातक ने आंतरिक भाड़े और प्रहस्तन प्रभारों के संबंध में समायोजनों का दावा किया है और आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन इन्हें अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि भारत को की गई बिक्रियां एफओबी आधार पर हैं अतः समुद्री भाड़े और बीमा प्रभारों के लिए कोई समायोजन नहीं होगा । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने ऋण लागत और बैंक प्रभारों के संबंध में कोई समायोजन नहीं किया है । तथापि, चूंकि प्राधिकारी ने इस स्तर पर इन कारकों के संबंध में कोई समायोजन नहीं किया है, परंतु जांच की प्रक्रिया के दौरान वे इन पहलुओं पर गौर करेंगे । इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. निर्धारित की है ।

### एनपीआईएमसी/बीपीसी के जरिए मै. सऊदी पोलियोल्फिन कंपनी

11.2 प्रतिवादियों द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है। निर्यातक ने अंतरदेशीय भाड़े, विदेशी भाड़े, निकासी और प्रहस्तन प्रभारों और ऋण लागत के संबंध में समायोजन का दावा किया है; और आगे जांच तथा मौके पर सत्यापन के अधीन इन्हें अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। तथापि, यद्यपि प्राधिकारी ने इस स्तर पर अन्य कारकों के संबंध में कोई समायोजन नहीं किया है परंतु वे जांच की प्रक्रिया के दौरान इन पहलुओं की जांच करेंगे। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

### सिंगापुर

#### मै. एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पैसिफिक, सिंगापुर

11.3 निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है। निर्यातक ने कमीशन, पैकिंग और समुद्री भाड़े के लिए समायोजनों का दावा किया है और आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन इन्हें अनंतिम रूप से स्वीकार किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने ऋण लागत, बैंक प्रभारों, निकासी प्रभारों आदि के लिए समायोजन का दावा नहीं किया है। तथापि, चूंकि प्राधिकारी ने इस स्तर पर इन कारकों के लिए कोई समायोजन नहीं किया है परंतु जांच की प्रक्रिया के दौरान वे इन पहलुओं की जांच करेंगे। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

#### मै. मित्सुबिशी केमिकल थाइलैंड (कंपनी) लि.

11.4 प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक एक व्यापारी है और मै. एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पैसिफिक, सिंगापुर द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को भारत को बेचता है। निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर भी दिया है। निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से विश्वास किया जा रहा है। यह नोट किया जाता है कि परिशिष्ट 2 में निर्यातक ने केवल सकल मूल्य के ब्यौरे दिए हैं और कमीशन, छूट, ऋण लागत, समुद्री भाड़े, बैंक प्रभारों, अंतरदेशीय परिवहन आदि जैसे भिन्न-भिन्न खर्चों के लिए समायोजनों का कोई ब्योरा उपलब्ध नहीं कराया है। अतः प्राधिकारी ने इन प्रभारों को सिंगापुर से एक अन्य निर्यातक द्वारा वहन किए गए खर्चों के रूप में अनंतिम रूप से माना है। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

#### मै. सुमितोमो कॉर्पोरेशन एशिया पैसिफिक लि.

11.5 निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है। निर्यातक ने कमीशन, ऋण लागत, बैंक प्रभारों, टर्मिनल प्रहस्तन प्रभारों और एससीएस के मार्जिन के लिए समायोजन

का दावा किया है और आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन इन्हें अनंतिम रूप से स्वीकार किया गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने यह उल्लेख नहीं किया है कि क्या भारत को की गई बिक्रियां सीआईएफ आधार पर हैं अथवा एफओबी आधार पर। तथापि, उत्पादक अर्थात् मै. पोलियोल्फिन कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि. के उत्तर से प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत को की गई बिक्रियां सीआईएफ आधार पर हैं अतः प्राधिकारी के पास विशेष रूप से इस संदर्भ में आवेदन में उल्लिखित समायोजनों के आधार पर खरीद पश्चात/कारखाना स्तर पर इन सीआईएफ कीमतों को परिवर्तित करने की कार्यवाई के अलावा और कोई विकल्प नहीं है कि ये समायोजन सिंगापुर से एक अन्य निर्यातक के अनुरोधों के अनुसार काफी अधिक हैं। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

#### मै. टोयोटा सुसो (सिंगापुर) पीटीई लि.

11.6 निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है। निर्यातक ने कमीशन, छूट, ऋण लागत, समुद्री भाड़े और अंतरदेशीय परिवहन के संबंध में समेकित समायोजन का दावा किया है और प्रत्येक समायोजन के लिए अलग-अलग आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं। तथापि, प्राधिकारी ने आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन उपर्युक्त समायोजनों को अनंतिम रूप से स्वीकार किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने बैंक प्रभारों के लिए समायोजन का दावा नहीं किया है तथापि, चूंकि प्राधिकारी ने इस स्तर पर बैंक प्रभारों के लिए कोई समायोजन नहीं किया है, परंतु जांच की प्रक्रिया के दौरान वे इन पहलुओं पर गौर करेंगे। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

#### मै. मरुबेनी कैमिकल एशिया पैसिफिक पीटीई लि.

11.7 निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है। निर्यातक ने कमीशन, छूट, ऋण लागत, समुद्री भाड़े, बैंक प्रभारों, अंतरदेशीय परिवहन आदि जैसे विभिन्न खर्चों के लिए परिशिष्ट-2 में किसी समायोजन का ब्यौरा नहीं दिया है। तथापि, प्राधिकारी ने सिंगापुर से एक अन्य निर्यातक द्वारा वहन किए गए खर्च के रूप में इन प्रभारों को अनंतिम रूप से स्वीकार किया है। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

#### मै. इटोचू प्लास्टिक्स पीटीई लि.

11.8 निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों पर आगे जांच और मौके पर सत्यापन के अधीन निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अनंतिम रूप से भरोसा किया जा रहा है। निर्यातक ने कमीशन और ऋण लागत के लिए समायोजनों का दावा किया है और आगे जांच तथा मौके पर सत्यापन के

अधीन इन्हें अंतिम रूप से स्वीकार किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने यह बताया है कि भारत को की गई बिक्रियों से संबंधित खर्चे उत्पादक द्वारा उठाए जाते हैं। तथापि, चूंकि प्राधिकारी ने इस स्तर पर इन खर्चों के लिए कोई समायोजन नहीं किया है परंतु जांच की प्रक्रिया के दौरान वे इन पहलुओं पर गौर करेंगे। इस प्रकार प्राधिकारी ने निर्यातक के लिए निर्यात कीमत \*\*\* अम.डा. प्रति मी.ट. के रूप में निर्धारित की है।

#### ज. पाटन मार्जिन

12. ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन निम्नानुसार निर्धारित किया गया है :

नाम	देश	पाटन मार्जिन	
		अम.डॉ./मी.ट.	%
मै. ओमान पोलीप्रोपीलीन एलएलसी	ओमान	***	29.31%
असहयोगी उत्पादक और निर्यातक	ओमान	***	243.70%
सुमितोमो कार्पोरेशन एशिया, पीटीई लि.	सिंगापुर	***	12.26%
मै. टोयोटा त्सुशो (सिंगापुर) पीटीई लि.	सिंगापुर	***	27.61%
मै. मारुबेनी केमिकल एशिया पेसिफिक पीटीई लि.	सिंगापुर	***	5.08%
मै. इटोचू प्लास्टिक्स पीटीई लि.	सिंगापुर	***	53.59%
मै. एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पेसीफिक, सिंगापुर	सिंगापुर	***	12.42%
मै. मित्सुबिशी केमिकल, थाइलैंड (कंपनी) लिमिटेड	सिंगापुर	***	12.02%
असहयोगी उत्पादक और निर्यातक	सिंगापुर	***	235.35%
एडवांस्ड पोलीप्रोपीलीन कंपनी	सऊदी अरब	***	53.59%
मै. सऊदी पोलीओलेफिन्स कंपनी	सऊदी अरब	***	1.89%
असहयोगी उत्पादक और निर्यातक	सऊदी अरब	***	185.68%

## झ. क्षति

### संचयी आकलन

13. विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन किया जा रहा है। इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-॥ पैरा (iii) उल्लेखनीय है जिसमें यह व्यवस्था है कि यदि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के आयात एक साथ पाटनरोधी जांच के अधीन हों तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आंकलन करेंगे यदि यह निर्धारित होता हो कि: -

क. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में 2% से अधिक हो और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयात का 3% हो या जहां अलग-अलग देशों से निर्यात 3% से कम हो वहां आयात संचयी रूप से समान वस्तु के आयात के 7% से अधिक हो तथा

ख. आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के आलोक में आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित हो।

13.1 प्राधिकारी यह समुक्ति करते हैं कि :

- i. संबद्ध देशों में से प्रत्येक का पाटन मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमाओं से अधिक है ;
- ii. संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयातों की मात्रा निर्धारित सीमाओं से अधिक है;
- iii. आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से होने वाले निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की जा रही समान वस्तु से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह बात इस तथ्य से साबित होती है कि घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद समान वस्तु हैं; संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयात काफी अधिक हैं; भारतीय उत्पादकों द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित वस्तु प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा करती हैं; साझे पक्षकार आयातित सामग्री और घरेलू सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं; भारतीय उत्पादकों के उपभोक्ता घरेलू सामग्री और आयातित सामग्री का उपयोग कर रहे हैं; संबद्ध देशों से निर्यातक और आवेदक ने समान अवधियों में उपभोक्ताओं के समान समूहों को समान उत्पाद की बिक्रियां की हैं आदि।

13.2 उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देशों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी आकलन करना उपयुक्त होगा।

13.3 पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच करने का प्रावधान है। (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव की जांच करते समय प्राधिकारी द्वारा इस बात की जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन और खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा इस बात की जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की जा रही है या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में भारी कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गई होती।

13.4 जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार वर्णन है :-

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

### हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

13.5 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को इन प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ उनके संगत पाए जाने की सीमा तक निम्नानुसार संक्षेप में दर्शाया गया है। अन्य बातों के साथ-साथ यह बताया गया है कि:

- (i) भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा 2005-06 में 91.34% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 92.16% हो गया है। इस प्रकार यह नहीं कहा जा सकता है कि संबद्ध देशों से हुए आयातों ने मांग की संपूर्ण वृद्धि पर कब्जा कर लिया है और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आयातों में वृद्धि के कारण हुई है।
- (ii) घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि संबद्ध देशों से काफी अधिक पाटित आयातों के कारण क्षति जांच अवधि के दौरान उनके क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। इस संबंध में यह नोट किया जाना चाहिए कि रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. ने डीएसई इंडिया को यह सूचित किया है कि उसने नवंबर, 2008 महीने और लगभग 4 हफ्तों के दौरान नियमित रख-रखाव और उत्पाद क्षमता बढ़ाने और मरम्मत के लिए अपने कुछेक पॉलिएस्टर संयंत्रों को बंद किया है। इसके कारण जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में कमी आई है।
- (iii) घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि उसे आयातों में वृद्धि के कारण अप्रैल-जून, 2008 की तुलना में अक्टूबर-दिसंबर, 2008 के दौरान घाटा उठाना पड़ा है। इस संबंध में यह



नोट किया जाना चाहिए कि रिलायंस इंडस्ट्रीज ने यह सूचित किया है कि उसकी पटल गंगा साइट ने अपनी सामान्य लागत इष्टतम बनाने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में 5 अक्टूबर, 2008 को एक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना घोषित की थी और लगभग 400 लोगों ने इस विकल्प को चुना था ।

- (iv) जांच अवधि के दौरान बिक्री, मूल्य और मात्रा में कोई गिरावट नहीं आई है क्योंकि बिक्री मात्रा में 2005-06 में 100 सूचीबद्ध यूनिटों से 2008-09 में 131 सूचीबद्ध वार्षिकीकृत यूनिटों की वृद्धि हुई है । बिक्री मात्रा और बिक्री मूल्य में हुई वृद्धि के विश्लेषण से यह पता चलता है कि प्रति मी.टन बिक्री प्राप्ति में भी वृद्धि हुई है क्योंकि बिक्री मूल्य में वृद्धि बिक्री मात्रा में हुई वृद्धि से अधिक है ।
- (v) आवेदक ने स्वीकार किया है कि कर्मचारियों की संख्या और उन्हें दी जाने वाली मजदूरी पर क्षति जांच अवधि के दौरान कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है । इस प्रकार इस कारक पर भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है ।

### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

13.6 घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

- (i) बाजार हिस्से के मुद्दे के संबंध में हितबद्ध पक्षकार यह साबित करने में विफल रहे हैं कि घरेलू उद्योग ने निर्धारित प्रारूप में बिल्कुल सही आवेदन प्रस्तुत किया है और क्षति के संबंध में किए गए अनुरोध क्षति विश्लेषण से संबंधित विधिक प्रावधानों की तर्ज पर हैं । घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि उसके बाजार हिस्से में गिरावट आई है । उनका यह दावा नहीं है कि बाजार हिस्से में यह गिरावट अन्य उत्पादक की बिक्रियों को ध्यान में रखने के बाद दर्ज की गई है । अतः गलत और भ्रामक दावे प्रस्तुत करने का आरोप निराधार है । इसके अलावा, दोनों मामलों (अर्थात् संपूर्ण घरेलू उत्पादकों को शामिल करने के बाद या पहले) में बाजार हिस्से की गतिविधि सार्वजनिक डोमेन में घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर कोई खास नहीं है । यह दोहराया गया है कि आयातों की वास्तविक मात्रा निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास उपलब्ध वास्तविक आयात आंकड़ों की दृष्टि से काफी अधिक है ।
- (ii) हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध के संबंध में कि उत्पादन और क्षमता उपयोग में गिरावट आरआईएल में योजनाबद्ध बंदी के कारण आई है, यह अनुरोध किया जाता है कि :
- (क) यह बंदी केवल जामनगर कॉम्प्लैक्स में की गई थी जबकि आरआईएल के पास पांच उत्पादन सुविधाएं हैं ।
- (ख) विचाराधीन उत्पाद की महीनेवार मालसूची की स्थिति से पता चलता है कि मालसूचियों में अप्रैल, 2008 में \*\*\* मी.ट. से सितंबर, 2008 के अंत में \*\*\* मी.ट. की वृद्धि हुई है जो अक्टूबर, 2008 के अंत में और बढ़कर \*\*\* मी.ट. हो गई थी । इस प्रकार अप्रैल से अक्टूबर, 2008 के दौरान अंतिम स्टॉकों में डूबने से अधिक वृद्धि हुई थी ।



- (ग) मालसूचियों में वृद्धि से उनकी वस्तुओं के भंडारण में गंभीर व्यावहारिक समस्याएं उत्पन्न हो गई क्योंकि पाटित कीमतों पर बढ़े हुए आयातों के कारण वस्तुओं के भंडारण के लिए वास्तविक स्थान का अभाव था। इसी संदर्भ में यह बताया गया था कि योजनाबद्ध बंदी पूर्व अपेक्षित थी क्योंकि आरआईएल पाटित कीमतों पर आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू बाजार में उत्पाद की बिक्री करने में असमर्थ था।
- (घ) हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि घाटा "योजनाबद्ध" बंदी के कारण हुआ था, यह अनुरोध किया जाता है कि रखरखाव संबंधी बंदी के लिए उत्तरदायी दिनों की संख्या एक दिन से कम है जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है। शेष अवधि के लिए बंदी जामनगर, कॉम्प्लैक्स में मालसूचियों में भारी और अव्यवस्थित वृद्धि के कारण आवश्यक थी। अपने इस तर्क के समर्थन में कि योजनाबद्ध रखरखाव के लिए की गई बंदी के दिनों की संख्या 1 है, इन वर्षों के दौरान योजनाबद्ध रखरखाव संबंधी बंदी के व्यौरों को देखा जाना आवश्यक है।
- (ङ) इन वर्षों के दौरान विशिष्ट रखरखाव संबंधी बंदी पूरे वर्ष भर में 7 दिन से कम रही है जिसका सत्यापन प्राधिकारी द्वारा उनके संयंत्रों में रखे जा रहे दैनिक रिकॉर्डों के व्यौरों से सरलता से किया जा सकता है। अतः यह तर्क कि उत्पादन और क्षमता उपयोग में घाटा योजनाबद्ध बंदी के कारण हुआ था, पूर्णतः निराधार है। रिकॉर्डों से यह स्पष्ट है कि यह बंदी बढ़ती हुई मालसूची और पाटित आयातों के कारण हुई थी।
- (iii) पाताल गंगा में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना के संबंध में यह अनुरोध किया गया है कि हितबद्ध पक्षकारों का तर्क निराधार है क्योंकि पाताल गंगा कॉम्प्लैक्स में पोलीप्रोपीलीन का कोई उत्पादन नहीं किया जाता है और स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना से संबंधित लागतें काफी कम हैं और संबद्ध वस्तु अर्थात् पोलीप्रोपीलीन के उत्पादन से संबंधित नहीं हैं।
- (iv) जहां तक बिक्री मात्रा और बिक्री मूल्य, कीमत प्रभाव और घरेलू उद्योग के इस दावे की कीमतों में लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप वृद्धि नहीं हुई है, का संबंध है, घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि हितबद्ध पक्षकारों ने कुछ स्वयंसिद्ध निष्कर्षों तक पहुंचने के लिए सूचीबद्ध संख्याओं का विश्लेषण किया है। घरेलू उद्योग द्वारा उनके आवेदन में दी गई वास्तविक संख्याओं से घरेलू उद्योग का तर्क स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि लागतों में वृद्धि जांच अवधि के दौरान कीमतों में हुई वृद्धि द्वारा कवर नहीं की गई है।
- (v) जहां तक मालसूचियों का संबंध है, यह अनुरोध किया गया है कि उन्होंने निर्धारित प्रारूप के अनुसार प्रारूप IVक में मूलभूत सूचना उपलब्ध कराई है जिसमें भंडार संबंधी बिन्दुवार सूचना की मांग की जाती है। घरेलू उद्योग की मासिक भंडार स्थिति और भाग-VI की सूचना से स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग की मालसूचियों में सितंबर और अक्टूबर के महीनों के दौरान अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और तत्पश्चात् जब घरेलू उद्योग के पास अपने घाटे वाले भंडारों के परिसमापन के अलावा कोई विकल्प नहीं था, भंडार स्तरों में गिरावट आई है। यह तथ्य घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है जिसमें यह दर्शाया गया है कि घरेलू उद्योग को अप्रैल-सितंबर, 2008 की अवधि की तुलना में अक्टूबर-दिसंबर, 2008 के दौरान घाटा उठाना पड़ा था।

(vi) पेज 14 पर तालिका में प्रदत्त लाभप्रदता संबंधी सूचना प्रारूप IV क में प्रदत्त सूचना से संगत है ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

13.7 प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के तथ्यों और तर्कों को ध्यान में रखते हुए वस्तुनिष्ठ ढंग से क्षति संबंधी मापदंडों की जांच की है ।

#### i. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

सभी संबद्ध देशों और अन्य देशों से आयातों से संबंधित ब्यौरे निम्नांकित तालिका में दर्शाए गए हैं:

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007-2008	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
संबद्ध देशों से आयात (मी.ट.)	63159	70454	114022	103677
आयात (अन्य देश) मी.ट.	53383	46814	79111	35033
कुल आयात (मी.ट.)	116542	117268	193132	138711
संबद्ध देशों से आयातों की प्रवृत्ति	100	111	181	164
अन्य देशों से आयातों की प्रवृत्ति	100	88	148	66
कुल आयातों की प्रवृत्ति	100	101	166	119
कुल मांग (मी.ट.)	1345762	1534137	1765778	1769783
मांग में संबद्ध देशों का % हिस्सा	5%	5%	6%	6%

यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से हुए आयातों में समग्र रूप से क्षति अवधि के दौरान 100 (2005-06) से जांच अवधि में 164 की वृद्धि हुई है । इसी के साथ अन्य देशों से होने वाले आयात आधार वर्ष में 100 से घटकर जांच अवधि में 66 रह गए हैं । भारत में कुल मांग की दृष्टि से आयातों में क्षति अवधि के दौरान भी वृद्धि हुई विशेष रूप से जांच अवधि के दौरान इनमें आधार वर्ष में 5% से जांच अवधि में 6% की वृद्धि हुई है ।

#### ii. मांग और बाजार हिस्सा

प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में समान वस्तु के केवल दो ज्ञात उत्पादक हैं जिनमें से एक याचिकाकर्ता और घरेलू उद्योग है । घरेलू उद्योग की बिक्रियों की प्रवृत्तियां 2007-08 तक वृद्धिकारी रही थीं परंतु जांच अवधि के दौरान इनमें गिरावट आई । इसी के साथ अन्य उत्पादक की बिक्रियों में जांच अवधि के दौरान भी वृद्धि होती रही थी । इस बात के होते हुए भी विचाराधीन उरत्पाद की मांग में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 32% तक

की वृद्धि हुई थी। वृद्धिशील मांग के परिदृश्य में संबद्ध देशों से आयातों का बाजार हिस्सा 5% से 6% के बीच रहा था और इसलिए घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में सुधार हुआ था।

तथापि, इस बात को एक चेतावनी के रूप में देखा जाना चाहिए। किसी व्यापारिक सत्ता के पास हमेशा यह विकल्प होता है कि या तो वह बिक्री प्राप्तियों को घटाकर अपने बाजार हिस्से को कायम रखे या बिक्री प्राप्ति को कायम रखकर बाजार हिस्से को गंवा दे। ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी बिक्री प्राप्तियों की लागत पर बाजार हिस्से को बनाए रखने के विकल्प को चुना है।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्री (मी.ट.)	***	***	***	***
अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री	***	***	***	***
भारत में कुल घरेलू बिक्री (मी.ट.)	1229221	1416870	1572646	1631072
संबद्ध देशों से आयात (मी.ट.)	63159	70454	114022	103677
अन्य देशों से आयात (मी.ट.)	53383	46814	79111	35033
कुल आयात (मी.ट.)	116542	117268	193132	138711
कुल मांग (मी.ट.)	1345762	1534137	1765778	1769783
मांग में कुल घरेलू बिक्री का बाजार हिस्सा	91%	92%	89%	92%
मांग में संबद्ध देशों से आयात का बाजार हिस्सा	5%	5%	6%	6%
अन्य देशों से आयात का बाजार हिस्सा	4%	3%	5%	2%

### iii. क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

क्षति अवधि के दौरान क्षमता एवं उत्पादन का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:-

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षमता (मी.ट.)	1400000	1700000	1700000	1700000
उत्पादन (मी.ट.)	1285511	1639199	1710002	1517688
क्षमता उपयोग %	92%	96%	101%	89%

यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 2007-08 तक वृद्धि होती रही, जब वह अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग कर रहा था, परंतु जांच अवधि के दौरान इसमें भारी गिरावट आई और यह 101% (2006-07) से घटकर 89% रह गई। संक्षेप में, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में आधार वर्ष 2005-06 तथा इसके पूर्ववर्ती वर्ष दोनों की तुलना में गिरावट आई जो मुख्यतः जामनगर स्थित संयंत्र बंद हो जाने के कारण आई।

घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि संयंत्र बंद होने का प्रमुख कारण सितंबर तथा अक्तूबर माह में मालसूची के स्तर में अत्यधिक वृद्धि होना था और उसके बाद स्टॉक के स्तर में गिरावट आई क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा स्टॉक का निपटान घाटा उठाकर किया गया।

#### iv. बिक्री

जैसा कि पहले नोट किया गया है, देश में विचाराधीन उत्पाद की मांग बढ़ती रही और घरेलू उद्योग मांग में बढ़ोत्तरी के अनुरूप अपनी बिक्री की मात्रा बढ़ाने में सक्षम रहा। दरअसल घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में 2006-07 में 20% की वृद्धि कर ली थी।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री की कुल मात्रा (मी.ट.)- घरेलू	***	***	***	***
बिक्री मूल्य (लाख रुपए)-घरेलू	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	135	155	166

#### v. घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव

प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति की जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों का पहुंच मूल्य 100 (आधार वर्ष 2005-06) से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 131 हो गया था। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में भी इसी प्रकार बढ़ोत्तरी का रुख देखा गया। संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमतों से सदैव अधिक रहे, अतः आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कीमत कटौती नहीं हुई। वर्ष 2007-08 के दौरान पहुंच कीमतें तथा घरेलू बिक्री कीमतें दोनों ही आधार वर्ष 2005-06 की तुलना में 17% अधिक रहीं। जांच अवधि के दौरान जहां पहुंच कीमतें 2007-08 की तुलना में 12.5% अधिक थीं, वहीं घरेलू बिक्री कीमतों में केवल 9% की वृद्धि हो सकी। तथापि, घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में हुई वृद्धि लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप नहीं थीं। लागत में वृद्धि की तुलना में बिक्री कीमतों में हुई तदनुरूपी वृद्धि की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग को कीमत ह्रास का सामना करना पड़ा है।

चूंकि क्षति अवधि के दौरान कीमत कटौती लगातार नकारात्मक रही अतः घरेलू उद्योग से यह स्पष्ट करने का अनुरोध किया गया कि वह अपनी घरेलू बिक्री कीमतों को बढ़ाकर कम

से कम कथित पाटित आयातों का पहुंच कीमतों के स्तर तक क्यों नहीं ला सका। घरेलू उद्योग ने इसका उत्तर देते हुए आरोप लगाया कि निर्यातकों ने पोतलदान-पश्चात भारी छूट दी और इस आरोप के समर्थन में घरेलू उद्योग ने कुछेक दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं। बहरहाल, जांच कार्यवाही तथा निर्यातकों के सत्यापन के दौरान इस पहलू की जांच की जाएगी।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि
पहुंच मूल्य रु./मी.ट.	51687	59386	60370	67940
सूचीबद्ध	100	115	117	131
निवल घरेलू बिक्री कीमत रु./मी.ट.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	114	117	127
लागत रु./मी.ट.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	109	112	148

#### vi. कीमत कटौती

प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति की समस्त अवधि के दौरान प्रत्येक संबद्ध देश के कारण नकारात्मक कीमत कटौती हुई है। घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि निर्यातकों ने पोतलदान-पश्चात भारी छूट दी और इस आरोप के समर्थन में घरेलू उद्योग ने कुछेक दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा पोतलदान-पश्चात भारी छूट दिए जाने के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावों पर विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि यह दावा युक्तियुक्त है क्योंकि इस पोतलदान-पश्चात छूट के कारण प्रभावित बाजार परिदृश्य को ध्यान में रखकर घरेलू उद्योग ने बिक्री से हुई आय को तदनुसार प्रस्तुत किया है। तथापि, पोतलदान-पश्चात छूटों से संबंधित दावों और उनके प्रतिवाद की जांच, जांच कार्यवाही एवं मौके पर सत्यापन के दौरान की जाएगी।

#### vii. कम कीमत पर बिक्री

प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्येक संबद्ध देश के संबंध में कम कीमत पर हुई बिक्री सकारात्मक रही है। कम कीमत पर की गई बिक्री का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

## कम कीमत पर बिक्री

	जांच अवधि
वांछित बिक्री कीमत (रु./मी.ट.)/एनआईपी	***
पहुंच मूल्य (रु./मी.ट.)	
संबद्ध देश	67940
ओमान	67113
सऊदी अरब	66383
सिंगापुर	70236
कम कीमत पर बिक्री (रु./मी.ट.)	
	***
संबद्ध देश	***
ओमान	***
सऊदी अरब	***
सिंगापुर	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	
	***
संबद्ध देश	***
ओमान	***
सऊदी अरब	***
सिंगापुर	***
कम कीमत पर बिक्री (%) -रेंज	
संबद्ध देश	5 -10
ओमान	5 -10
सऊदी अरब	5 -10
सिंगापुर	2 - 5

**viii. लाभप्रदता**

लाभप्रदता से संबंधित ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
कुल बिक्री (मी.ट.)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	118	133	131
बिक्री मूल्य (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	135	155	166
बिक्री कीमत/इकाई	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	114	117	127
लागत(लाख रुपए)	***	***	***	***
लागत/इकाई	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	109	112	148
लागत/मी.ट.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	141	140	20

प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। जांच अवधि के दौरान, जहां 2005-06 की अवधि में 100 की तुलना में बिक्री की लागत 148 (सूचीबद्ध) थी, परंतु बिक्री कीमतों में तदनुरूप अवधि में हुई वृद्धि केवल 100 से 127 थी। संक्षेप में, घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान लागत में वृद्धि के अनुरूप कीमतों में वृद्धि नहीं कर सका, जिसके परिणामस्वरूप लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में आई गिरावट पूर्ववर्ती वर्ष की गिरावट की तुलना में अत्यधिक प्रवृत्ति के विश्लेषण से जांच अवधि के दौरान उल्लेखनीय कीमत ह्रास होने का पता चलता है।

**ix. नियोजित पूंजी से आय**

यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई पूंजी से आय में भी क्षति अवधि के दौरान भारी गिरावट आई है।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि
नियोजित पूंजी	***	***	***	***
ब्याज पूर्व लाभ	***	***	***	***
आरओसीई (%)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	145	182	30

**X. नकद प्रवाह**

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की नकद प्रवाह की स्थिति में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई और इसकी प्रवृत्ति भी लाभप्रदता और नियोजित पूंजी से आय (आरओसीई) के समान देखी गई ।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि
लाभ/हानि (लाख रुपए)	***	***	***	***
जोड़ें: मूल्यहास (लाख रुपए)	***	***	***	***
नकद प्रवाह (लाख रुपए में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	155	169	48

**xi. रोजगार एवं मजदूरी**

यह नोट किया गया है कि क्षति की जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या और मजदूरी में वृद्धि हुई ।

**xii. उत्पादकता**

क्षति की जांच अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में भी वृद्धि हुई । यह नोट किया जाता है कि उत्पादकता घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है ।

**xiii. वृद्धि**

यह नोट किया जाता है कि क्षति की जांच अवधि के दौरान देश में मांग में वृद्धि हुई, जबकि इसी अवधि में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई । क्षमता उपयोग, लाभप्रदता, नियोजित पूंजी से आय, और नकद प्रवाह में भी क्षति की जांच अवधि के दौरान गिरावट आई । यह इस बात का द्योतक है कि घरेलू उद्योग की वृद्धि प्रभावित हुई है ।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि				
मांग	100	114	131	132
नकद लाभ	100	155	169	148
नियोजित पूंजी पर आय	100	145	182	30



**xiv. मालसूची**

आवेदन में प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि औसत मालसूची 100 (आधार वर्ष 2005-06) से घटकर 73 रह गई जो कुल खरीद में वृद्धि दर्शाती है।

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	जांच अवधि
प्रारंभिक स्टॉक (मी.ट.)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	136	153	132
अंतिम स्टॉक (मी.ट.)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	112	97	29
औसत स्टॉक (मी.ट.)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	122	121	73

घरेलू उद्योग ने तत्पश्चात स्टॉक की माहवार स्थिति का ब्योरा प्रस्तुत किया था जो यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि सितंबर और अक्टूबर माह के दौरान मालसूची में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी और उसके बाद स्टॉक के स्तर में कमी आई क्योंकि घरेलू उद्योग ने घाटा उठाकर स्टॉक का निपटान किया।

माह	अंतिम स्टॉक	सूचीबद्ध
अप्रैल 2008	***	100
मई 2008	***	83
जून 2008	***	61
जुलाई 2008	***	100
अगस्त 2008	***	142
सितंबर 2008	***	158
अक्टूबर 2008	***	204
नवंबर 2008	***	71
दिसंबर 2008	***	29

**xv. पूंजी/निवेश जुटाने की क्षमता**

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में वृद्धि की है। पिछली बार क्षमता में वृद्धि वर्ष 2006-07 में की गई थी। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि चूंकि भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग बढ़ रही है और यह घरेलू उद्योग की क्षमता से अधिक है अतः आयात अवश्यभावी है, जब घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तुओं का निर्यात भी कर रहा है। परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि ऐसे आयात पाटित कीमतों पर किए जाने चाहिए।

ऐसे परिदृश्य में जब मांग घरेलू उद्योग की क्षमता से अधिक है, घरेलू उद्योग क्षमता वर्धन हेतु उत्सुक होगा। तथापि लाभप्रदता से संबंधित मानदंड इस बात का समर्थन नहीं करते कि घरेलू उद्योग निवेश हेतु बाजार से पूंजी जुटाने में समर्थ होगा।

### वास्तविक क्षति से संबंधित निष्कर्ष

13.8 जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, डब्ल्यूटीओ के पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.2 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (ii) की शर्तों के अनुसार प्राधिकारी को यह विचार करने की बाध्यता है कि क्या पाटित आयातों में निरपेक्ष रूप से अथवा आयातक सदस्य देश के उत्पादन अथवा खपत के सापेक्ष उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तथापि इसका विश्लेषण अलग से नहीं किया जा सकता, क्योंकि व्यावसायिक सत्ताओं की यह सामान्य पद्धति है कि वे किसी भी प्रतिस्पर्धा के प्रभाव का आकलन बाजार हिस्से अथवा अपनी बिक्री से प्राप्त आय के आधार पर करती हैं। जाहिर है कि घरेलू उद्योग ने भी इस मामले में इस प्रभाव का आकलन अपनी बिक्री से प्राप्त आय के आधार पर करना पसंद किया है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी को विचार करना होता है कि क्या आयातक सदस्य देश के समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का उद्देश्य कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक मंदी लाना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है, ये अन्यथा अत्यधिक सीमा तक हुई होती। यह नोट किया जाता है कि इन कारकों में से कोई एक कारक अथवा अनेक कारक मिलकर भी कोई निर्णायक दिशा-निर्देश प्रदान नहीं कर सकते।

13.9 प्राधिकारी नोट करते हैं कि डब्ल्यूटीओ के पाटनरोधी करार अथवा नगर पालिका कानून में यह परिकल्पित नहीं है कि घरेलू उद्योग पाटनरोधी प्रावधानों के अंतर्गत राहत हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी से संपर्क करने से पूर्व घाटे का सामना करे। इसके अलावा प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति विश्लेषण अनिवार्यतः एक प्रवृत्ति विश्लेषण है और इस विश्लेषण से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निर्धारण हेतु किसी एक कारक को निर्णायक कारण नहीं माना जा सकता।

13.10 यह देखा गया है कि प्रस्तुत मामले में कीमत कटौती नकारात्मक है। परंतु घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि निर्यातकों ने पोतलदान-पश्चात भारी छूट दी और इस आरोप के समर्थन में घरेलू उद्योग ने कुछेक दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा पोतलदान पश्चात भारी छूट देने के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावों (जिनका उल्लेख इस जांच परिणाम के पैरा 13.7 के उप पैरा V में दिया गया है) पर विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि यह दावा युक्तियुक्त है क्योंकि इस पोतलदान-पश्चात छूट के कारण प्रभावित बाजार परिदृश्य को ध्यान में रखकर घरेलू उद्योग ने बिक्री से हुई आय को तदनुसार प्रस्तुत किया है। तथापि, पोतलदान-पश्चात छूटों से संबंधित दावों और उनके प्रतिवाद की जांच, जांच कार्यवाही एवं मौके पर सत्यापन के दौरान की जाएगी।

13.11 प्राधिकारी नोट करते हैं कि उल्लेखनीय कीमत ह्रास के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, जिसकी वजह से लाभप्रदता, आरओसीई और नकद प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कम कीमत पर की गई बिक्री भी अत्यधिक पाई गई है। इसके अलावा आगामी

जांच के दौरान पोतलदान पश्चात छूट संबंधी घरेलू उद्योग के आरोप यदि सही पाए जाते हैं तो कम कीमत पर बिक्री के सकारात्मक होने की भी संभावना है ।

13.12 यह भी देखा गया है कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री से हुई प्राप्ति की कीमत पर अपने बाजार हिस्से को बनाए रख सका है । जांच अवधि के दौरान, जहां 2005-06 की अवधि में 100 की तुलना में बिक्री की लागत 148 (सूचीबद्ध) थी, परंतु बिक्री कीमतों में तदनुरूप अवधि (2005-06) में हुई वृद्धि केवल 100 से 127 थी । संक्षेप में, घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान लागत में वृद्धि के अनुरूप कीमतों में वृद्धि नहीं कर सका, जिसके परिणामस्वरूप लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई । घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में आई गिरावट पूर्ववर्ती वर्ष की गिरावट की तुलना में अत्यधिक प्रवृत्ति के विश्लेषण से जांच अवधि के दौरान उल्लेखनीय कीमत ह्रास होने का पता चलता है । घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है जो समुचित स्तर से भी नीचे चली गई है, हालांकि यह थोड़ा-बहुत लाभ अर्जित कर रहा है । घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की जांच से ज्ञात होता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का सामना करना पड़ा है । जहां तक वास्तविक क्षति के दावे का संबंध है, प्राधिकारी इसको जांच की कार्यवाही के दौरान करेंगे ।

#### ट. कारणात्मक संबंध

14 यह जांच की गई कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध कारकों ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति में कोई योगदान दिया है । यह निम्नानुसार पाया गया है :- :

- (क) तीसरे देशों से आयात:- जांच अवधि के दौरान कोरिया को छोड़कर अन्य संबद्ध देशों से स्रोतों से आयात न्यूनतम से कम हैं । तथापि कोरिया की कीमतें संबद्ध देशों द्वारा पेशकश की गई कीमतों से अधिक हैं ।
- (ख) मांग में संकुचन :- यह नोट किया गया है कि विचाराधीन अवधि के दौरान मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है । इसके विपरीत क्षति की जांच अवधि के दौरान मांग में समग्रतः 32% की वृद्धि हुई है ।
- (ग) खपत का पैटर्न :- खपत के पैटर्न में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं देखा गया है ।
- (घ) प्रतिस्पर्धा की शर्तें :- आवेदक ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग को हुई कथित क्षति के लिए प्रतिस्पर्धा की शर्तें अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां उत्तरदायी नहीं हैं । किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस दावे का प्रतिवाद नहीं किया है ।
- (ङ.) प्रौद्योगिकी विकास : आवेदक ने दावा किया है कि प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है, जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो ।
- (च) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन: घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन ने घरेलू बाजार में याधिकाकर्ता की वित्तीय तथा आर्थिक स्थिति को किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं किया है । पूर्ववर्ती पैराग्राफों में किए गए क्षति विश्लेषण में निर्यात संबंधी आंकड़े शामिल नहीं किए गए हैं ।

14.1 प्राधिकारी नोट करते हैं कि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात कारक जहां घरेलू उद्योग को कोई क्षति प्रदर्शित नहीं करते, वहीं निम्नलिखित कारक दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति, पाटित आयातों के कारण हुई है।

- क. संबद्ध देशों से पाटित आयातों में निरपेक्ष रूप में तथा भारत में कुल आयातों, कुल मांग तथा उत्पादन के सापेक्ष वृद्धि हुई है।
- ख. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है जबकि मांग में वृद्धि हुई है।
- ग. मांग में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग की कीमतों में हास हुआ है।
- घ. प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन अत्यधिक है और प्रत्येक संबद्ध देश से कम कीमत पर भी अत्यधिक बिक्री हुई है।

14.2 उपर्युक्त विवेचन से यह प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है।

#### ट. निष्कर्ष:

15. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों एवं उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच के उपरांत तथा रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :-

- (क) संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का भारत को निर्यात संबंधित सामान्य मूल्यों से कम मूल्यों पर किया गया है।
- (ख) विचाराधीन उत्पाद में घरेलू उद्योग ने वास्तविक क्षति का सामना किया है।
- (ग) संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

#### ठ. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

16. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे; अतः उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

16.1 यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण से संबद्ध वस्तुओं के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद की कीमतें प्रभावित हो सकती हैं और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की

सापेक्षिक प्रतिस्पर्धात्मकता पर भी कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों के कारण भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी; विशेष रूप से तब, जब पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निवारण के लिए जरूरी राशि तक सीमित रखा जाए। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण से पाटन पद्धतियों द्वारा हासिल अनुचित लाभ दूर होगा, घरेलू उद्योग की गिरावट पर रोक लगेगी और संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प की उपलब्धता को बनाए रखने में सहायता मिलेगी।

#### ड. सिफारिशें

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच की शुरुआत करके इसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों व अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमावली के अनुसरण में पाटन, क्षति व उनके बीच कारणात्मक संबंध के बारे में जांच की शुरुआत करके प्रारंभिक जांच संपन्न करने और सकारात्मक पाटन मार्जिन के अंतिम निर्धारण तथा ऐसे पाटन आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को सिद्ध करने के बाद प्राधिकारी का विचार है कि जांच की कार्यवाही पूरी होने तक पाटन तथा क्षति को निष्प्रभावी करने के लिए पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निम्नलिखित रूप तथा तरीके से अंतिम पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करना आवश्यक समझते हैं और इसकी सिफारिश करते हैं।

प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा "क्षति" मार्जिन में से कमतर के तुल्य अंतिम पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की "क्षति" दूर हो सके। तदनुसार संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में विनिर्दिष्ट राशि के अनुसार अंतिम पाटनरोधी शुल्क केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से अधिरोपित करने की सिफारिश की जाती है।

क्र. सं.	शीर्ष / उप शीर्ष	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	39021000 एवं 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पोलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एथीलीन के को-पोलीमर्स)	ओमान	ओमान	मै. ओमान पोलीप्रोपीलीन एलएलसी	मै. ओमान पोलीप्रोपीलीन एलएलसी	शून्य	मी.ट.	अम.डॉ.
2	39021000 एवं 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पोलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एथीलीन के को-पोलीमर्स)	ओमान	ओमान	क्र.सं. 1 में विनिर्दिष्ट संयोजन को छोड़कर अन्य कोई		977.67	मी.ट.	अम.डॉ.
3	39021000 एवं 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पोलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एथीलीन के को-पोलीमर्स)	ओमान	ओमान से इतर अन्य कोई	कोई	कोई	977.67	मी.ट.	अम.डॉ.
4	39021000 एवं 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पोलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एथीलीन के को-पोलीमर्स)	उन देशों को छोड़कर कोई देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	ओमान	कोई	कोई	977.67	मी.ट.	अम.डॉ.
5	39021000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात्	सऊदी अरब	सऊदी अरब	एडकार्ड	एडकार्ड	440.48	मी.ट.	अम.डॉ.

	एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)			पोलीप्रोपीलीन कंपनी	पोलीप्रोपीलीन कंपनी			
6	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सऊदी अरब	सऊदी अरब	सऊदी पोलीप्रोलेफिन्स कंपनी	नेशनल पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीयल्स इजेशन मार्केटिंग कंपनी/बेसल पोलीप्रोलेफिन्स कंपनी	शून्य	मी.ट.	अम.डॉ.
7	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सऊदी अरब	सऊदी अरब	क.स.5 एवं 8 में विनिर्दिष्ट संयोजन को छोड़कर अन्य कोई		820.55	मी.ट.	अम.डॉ.
8	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सऊदी अरब	सऊदी अरब से इतर अन्य कोई	कोई	कोई	820.55	मी.ट.	अम.डॉ.
9	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	उन देशों को छोड़कर कोई देश, जिन पर प्रातनरोधी शुल्क लगा है	सऊदी अरब	कोई	कोई	820.55	मी.ट.	अम.डॉ.
10	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	दि पोलीप्रोलेफिन्स कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.	सुमिलो मो कार्पोरेशन एशिया पीटीई लि.	81.20	मी.ट.	अम.डॉ.
11	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	दि पोलीप्रोलेफिन्स कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.	टोयोटा त्सुशो (सिंगापुर) पीटीई	119.32	मी.ट.	अम.डॉ.
12	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	दि पोलीप्रोलेफिन्स कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.	मारुबेनी केमिकल एशिया पॅसिफिक पीटीई लि.	शून्य	मी.ट.	अम.डॉ.
13	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	दि पोलीप्रोलेफिन्स कंपनी (सिंगापुर) पीटीई लि.	इटोचू प्वास्तिक्स पीटीई लि.	472.29	मी.ट.	अम.डॉ.
14	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पॅसिफिक	एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पॅसिफिक	44.43	मी.ट.	अम.डॉ.
15	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	एक्सोन मोबिल केमिकल एशिया पॅसिफिक, सिंगापुर	मिल्लुबिरी केमिकल थाइलैंड (कंपनी) लि	शून्य	मी.ट.	अम.डॉ.
16	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर	क.स.10-15 में विनिर्दिष्ट संयोजन को छोड़कर अन्य कोई		1033.65	मी.ट.	अम.डॉ.
17	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	सिंगापुर	सिंगापुर से इतर अन्य कोई	कोई	कोई	1033.65	मी.ट.	अम.डॉ.
18	39021000 एव 39023000	पोलीप्रोपीलीन (अर्थात् प्रोपीलीन के होमो-पॉलीमर्स एवं प्रोपीलीन तथा एबीलीन के को- पॉलीमर्स)	उन देशों को छोड़कर कोई देश, जिन पर प्रातनरोधी शुल्क लगा है	सिंगापुर	कोई	कोई	1033.65	मी.ट.	अम.डॉ.

#### द. आगे की प्रक्रिया

18 प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:--

(क) प्राधिकारी समस्त हितबद्ध पार्टियों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा;

- (ख) प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, आवेदकों और संबंधित समझी जाने वाली ज्ञात अन्य हितबद्ध पार्टियों को अलग से लिखा जा रहा है, जो पत्र के प्रेषण की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इस जांच परिणाम के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है;
- (ग) प्राधिकारी विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के विचारों की मौखिक सुनवाई करने के लिए एक सुनवाई आयोजित करेंगे।
- (घ) प्राधिकारी द्वारा आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे और सत्यापन किया जाएगा;
- (ङ) प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमों के अनुसार अंतिम जांच परिणाम घोषित करने से पूर्व अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन किया जाएगा।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**

**(Department of Commerce)**

**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**

**NOTIFICATION**

New Delhi, the 15th June, 2009

**Preliminary Findings**

**Subject :—Anti-Dumping investigation concerning imports of Polypropylene originating in or exported from Oman, Saudi Arabia and Singapore.**

**No. 14/5/2009-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred as the AD Rules);

**A. PROCEDURE**

2. The procedure described herein below has been followed:

- i The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the above Rules, received a written application from M/s Reliance Industries Ltd. on behalf of the domestic industry, alleging dumping of 'Polypropylene (i.e., homo polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)' (hereinafter also referred to as the subject goods); originating in or exported from Oman, Saudi Arabia and Singapore (hereinafter referred to as subject countries).
- ii The Authority notified the High Commission/Embassies of the subject countries in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

- iii The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry issued a public notice dated 24<sup>th</sup> February 2009 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of 'Polypropylene (i.e., homo polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)' originating in or exported from subject countries, in accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.
- iv The Designated Authority sent a copy of initiation notification dated 24<sup>th</sup> February 2009 to the High Commission/Embassies of the subject countries in India, known exporters from subject countries, known importers/ users and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- v Request for extension of time to file the questionnaires' response was received from some interested parties. The Authority granted the time extension, keeping in view the time constraints.
- vi The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the High Commission/Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) supra.
- vii The High Commission/Embassies of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known exporters.
- viii The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rules 6(4):
  - 1. Advanced Polypropylene Company, Saudi Arabia
  - 2. SABIC Basic Industries Corporation, Saudi Arabia
  - 3. Tasnee – National Industrialization Company, Saudi Arabia
  - 4. ExxonMobil Chemical Co, Singapore 098633
  - 5. Oman Polypropylene LLC, Oman
- ix In response to the initiation notification, the following exporters / producers from subject countries have responded:
  - 1. M/s Oman Polypropylene LLC, Oman
  - 2. M/s Advanced Polypropylene Company, Saudi Arabia
  - 3. M/s Saudi Basic Industries Corporation, Saudi Arabia (SABIC)
  - 4. M/s Saudi Polyolefins Company, Saudi Arabia
  - 5. M/s National Petrochemical Industrialization Marketing Company, Saudi Arabia
  - 6. M/s Basell International FZE, Saudi Arabia
  - 7. M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore
  - 8. M/s Itochu Plastics Pte. Ltd.
  - 9. M/s Marubeni Chemical Asia Pacific PTE Ltd., Singapore
  - 10. M/s Sumitomo Chemical Asia Pte Ltd., Singapore



11. M/s Sumitomo Corporation Asia Pte Ltd., Singapore
12. M/s The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.
13. M/s Toyota Tsusho (Singapore) Pte Ltd., Singapore

x Questionnaires were sent to the following known importers / users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):

1. Organization of Plastics Processors Of India, Mumbai
2. All India Plastics Manufacturers Association, Mumbai
3. All India Flat Tape Mfrs. Association, New Delhi
4. P.P. Products Pvt. Ltd., Kolkata
5. Tarajyot Polymers Ltd., Kolkata
6. ITC Ltd., Kolkata
7. Paharpur Cooling Towers Ltd., Kolkata
8. Time Packaging Ltd., Mumbai
9. Petro Plast Industries Limited, Chennai
10. The Supreme Group, Mumbai
11. Big Bags (India) Private Ltd., Bangalore
12. Paramount Communications Ltd., New Delhi
13. Packaging India Pvt Ltd., Chennai
14. Flex Industries Limited, Noida
15. Bishan Saroop Ramkishan Agro, delhi
16. Blow Packaging (India) Ltd. , Chennai
17. Chennai Polypack Private Ltd., Chennai
18. Hydro S & S Industries Ltd., Chennai
19. Exide Industries Ltd., Kolkata
20. Pentadaewha Auto Parts Ltd., Chennai
21. Veekay Polycoats Ltd., New Delhi
22. Machino Plastics Ltd., Gurgaon
23. Dow Chemical International Ltd., Mumbai
24. Hitech Plast Ltd., Mumbai
25. General Commodities Pvt. Ltd., Bangalore
26. Balmer Lawrie-Van Leer Ltd., Mumbai
27. Baxter India Pvt. Ltd., Gurgaon

xi In response thereof, following have responded:

1. Trichy & Pudukkottai Districts Plastic Manufacturers, Traders' Association (TRIPPM),
2. M/s. P.P. Products Private Limited, Bangalooru
3. M/s. Rajyot Polymers Ltd., Bangalore,
4. Chennai Plastics Manufacturers & Merchants Association,
5. Coimbatore Plastic Manufacturers & Trader's Association, Tamilnadu,
6. The Coimbatore District Plastics Manufacturer's Association,
7. PLASMA, Pondy Plastic Manufacturers & Merchants Association,
8. Sivakasi Plastic Manufacturers Association (SIPMA),
9. Tirupur Plastics Manufacturers Association (TIPMA),
10. Veekay Polycoats Limited, Gurgaon/New Delhi,
11. North Orissa Chamber of Commerce & industry,
12. Dindigul District Polythene Bag Manufactures
13. Dealers Welfare Association
14. Salem Plastic Sellers' & Manufacturers' Association.

15. All Pondicherry Plastic Traders & Manufacturers Association (APPTMA)
16. M/s Kanpur Plastipack Ltd.
17. M/s Jolly Containers, India
18. M/s Daman Polyfabs, India
19. M/s Essel Propack Ltd., India
20. All India Plastic Manufacturers' Association (AIPMA)-Mumbai,
21. All India Flat Tape Manufacturers' Association (AIFTMA)-Bangalore,
22. All India Syringes and Needles Manufacturer's Association
23. Indian Plastics Federation (IPF)-Kolkata,
24. Organisation of Plastic Processors of India (OPPI)-Mumbai,
25. Gujarat State Plastics Manufacturers' Association (GSPMA)-Ahmedabad,
26. The Tamil Nadu Plastics Manufacturers' Association (TAPMA)-Chennai.
27. Andhra Pradesh Plastics Manufacturers' Association (APPMA), Hyderabad
28. Ms/ Blow Packaging (India) Ltd. , India
29. M/s Jumbo Bag Ltd., Chennai
30. M/s Hitech Plast Ltd., India

- xii Request has been made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and for the period of investigation.
- xiii The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- xiv Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xv Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> April 2008 to 31<sup>st</sup> December 2008 (hereinafter also referred to as the POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the periods April, 2005–March, 2006, April, 2006–March, 2007, April, 2007–March, 08 and the POI. For assessing the threat of material injury, post POI data has also been considered
- xvi \*\*\* in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.

**B. Period of Investigation****Submissions made by the Interested Parties**

3. It has been contended that the period of investigation in the present case is too short and includes the months during which the movement of raw materials and polypropylene prices was erratic due to global recession. The period of investigation should be fixed for a period of 18 months for a fair and proper analysis.

**Examination by the Authority**

4. The Authority has noted the submissions made by the interested parties regarding period of investigation and is of the view that the period of investigation chosen in the instant matter has been appropriately chosen, covering the most recent available data on the subject.

**C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND DOMESTIC LIKE ARTICLE**

5. The product under consideration is 'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'. The subject goods are used as woven sacks for cement, food-grains, sugar, fertilizer, bags for fruits & vegetables, TQ & BOPP films, containers etc.

5.1 The subject goods are classified under Custom Headings 39021000 and 39023000. The Customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

**Submissions made by the Interested Parties**

- It has been contended that the Application covers two products i.e. Propylene-homo-polymer and Propylene copolymers as classified under the subheading 39021000 and 39023000 of the Customs Tariff Act and that these two products are different from each other. Propylene copolymer is \*\*\*% expensive than Poly-propylene homo-polymer and is technically superior to Poly-propylene.
- It has been contended that Domestic industry is neither manufacturing nor has the capability to manufacture certain specific grades of the Propylene copolymer.

**Submissions made by the domestic industry**

- Product under Consideration: It has been contended that since the product under consideration covers all types of Polypropylene, it cannot be argued that a distinction has to be made out merely because there are some differences in the products. As far as the Domestic Industry is concerned, there is no difference in the cost of production of the two types of Polypropylene. It has been contended that the price difference is also minimal i.e. about \*\*\*%. Besides, Naphtha and Gas crackers at RIL, Ethylene and Propylene are treated as Joint Products. In view of above, price of Propylene and Ethylene for Polypropylene production will

be same. Thus, cost of production of Polypropylene Homo-polymer and Co-polymers is the same. The Domestic Industry further claims that the price difference between the two types of Polypropylene is also minimal (\*\*\*%). It has also stated that from the non-confidential version of the exporters' questionnaire responses, it is not clear whether they have given the information separately for each type of Polypropylene.

- A specific reference was made to the domestic industry seeking their comments regarding the claims made by some exporters in respect of exclusion of certain grades. The domestic industry has responded by stating that the claims of the exporters are unfounded as the domestic industry indeed offers the subject goods of the specifications claimed to be not manufactured by the domestic industry.

### **EXAMINATION BY THE AUTHORITY**

- **Product under Consideration:** The Authority notes that the scope of the investigation was clearly defined while initiating the investigation viz. 'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'. It has not been disputed by any party that copolymers of propylene and ethylene are not Polypropylene. Some of the interested parties have contended that there is a price difference between the homo-polymer and the co-polymer. These claims have, however, been disputed by the domestic industry. The Authority has taken note of the claims and counterclaims and would look into the issue for making adjustments for undertaking appropriate comparisons should these claims be substantiated.
- **Lack of manufacturing capabilities in India:** The Authority notes that the claims regarding exclusion of certain grades of polypropylene has been contested and refuted by the domestic industry. In a reference made to them on the subject, the domestic industry has categorically asserted that they indeed offer the subject goods of the specified grades claimed to be not manufactured by the domestic industry as per the assertion of the exporters. They have provided the details of the equivalent grades manufactured by them. However, the Authority would further investigate and verify the claims and counterclaims made by various interested parties on this issue during the course of the investigation and spot verification.

5.2 With regard to like article, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under: -

*"like article " means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;*

5.3 After considering the information on record, the Authority for the purposes of the preliminary findings holds that there is no significant difference in product under consideration exported from subject countries and the product produced by the Indian industry. Product under consideration produced by the domestic industry are comparable to the imported subject product in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, functions & uses, in respect of manufacturing process & technology, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.

5.4 Thus, the Authority is of the view that product under consideration produced by the applicant domestic industry is like article to the subject product under consideration in accordance with the AD Rules.

#### **D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING**

6. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under:-

*(b) "Domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers may be deemed not to form part of domestic industry.*

6.1 According to the applicant, there are only two producers of the like Article in the country. The Application has been filed by M/s Reliance Industries Ltd. on behalf of the domestic industry. The other producer that is M/s Haldia Petrochemicals Ltd. has supported the application.

6.2 As per the evidence available on record, production of M/s Reliance Industries Ltd. accounts for a major proportion of the domestic production of like article, being significantly more than 50% of Indian production. The application thus satisfied the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules. Further, M/s Reliance Industries Ltd. is being treated as "domestic industry" within the meaning of Rule 2(b) read along with Rule 2(d) of the AD Rules for the purpose of the present findings.

#### **E. CONFIDENTIALITY**

##### **Submissions made by Interested Parties**

7. It has been contended that the Designated Authority must come to a categorical conclusion that confidential treatment contended in the petition is bona fide and germane to the rights of the domestic industry. A bare perusal of the petition indicates that confidentiality has been claimed as a rule rather than exception. It has

been contended that that the initiation without disclosing essential details as enumerated below is contrary to the Rules:

### **Submissions made by the domestic industry**

7.2 The exporters have claimed excessive confidentiality without any proper justification. Further, non-confidential version of the questionnaire response has not been given for all the information contained in the confidential version without assigning proper reasons. It is not in sufficient detail to permit a reasonable understanding of the substance of the information submitted in confidence. From the non-confidential version of the questionnaire responses, it is not clear whether they have given the information separately for each type of Polypropylene. In this context, it is submitted that all the exporters have claimed confidentiality on even the quantum of imports which is not admissible since the Domestic Industry has been made to provide quantity related information even in the non-confidential version of the application.

### **Examination by the Authority**

7.3 The Authority has taken note of the above submissions and is of the view that the domestic industry has made confidentiality claims with respect to certain portions of the application. While doing so, the domestic industry duly submitted the non-confidential version of the application along with the statement of reasons for the same to the satisfaction of the Authority.

## **F. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN**

### **Normal Value**

8. The Authority sent questionnaire to the known exporters from subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. Response to the questionnaires were received from the following companies –

1. M/s Oman Polypropylene LLC, Oman
2. M/s Advanced Polypropylene Company, Saudi Arabia
3. M/s Saudi Basic Industries Corporation, Saudi Arabia (SABIC)
4. M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Saudi Arabia
5. M/s Saudi Polyolefins Company, Saudi Arabia
6. M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore
7. M/s The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.
8. M/s Itochu Plastics Pte. Ltd., Singapore
9. M/s Marubeni Chemical Asia Pacific PTE Ltd., Singapore
10. M/s Sumitomo Corporation Asia Pte Ltd., Singapore
11. M/s Toyota Tsusho (Singapore) Pte Ltd., Singapore
12. M/s Mitsubishi Chemical Thailand (Co.) Ltd.
13. M/s Sumitomo Chemical Asia Pte Ltd., Singapore

**Submissions made by Interested parties**

9. It has been contended that the Authority should not rely on the dumping calculation given in the application. The exporters have charged fair export prices which are in line with world and Indian prices for the like products type, specifications and quality. As such, the Petitioners' dumping allegations, based on normal value calculated in accordance with figment of imagination of the petitioners, are entirely baseless and that the Authority should refer to the respective questionnaire responses in this regard.

**Methodology adopted for determination of Normal value**

10. Since the following companies have responded to the questionnaire, the Authority has determined individual dumping margin in respect of these companies. The general methodology adopted for determination of Normal value is as follows:

10.1 It was first seen, whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets were representative and viable for permitting determination of Normal values on the basis of domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents, subject to verification. Wherever the respondents have provided transaction-wise details of sales made in their home markets, the information so provided has been relied upon to determine the Normal value for the subject goods, subject to further investigation and verification.

10.2 In other cases, the costs of production claimed by the exporters have been provisionally accepted, pending further investigation, wherever feasible. And where it was not feasible, the Normal value has been determined by the Authority on the basis of facts available on a provisional basis.

10.3 The Authority notes that the Hon'ble Supreme Court of India in the case of M/s Reliance Industries Ltd. Vs. Designated Authority has held that the Normal value is not exporter specific but exporting country specific. Therefore, the Authority first calculated the producer / exporter specific ex-factory Normal value for each of the producers / exporters, wherever feasible; and then determined a separate single weighted average Normal value for each of the subject countries as a whole and the same is compared with the ex-factory export realisation of each co-operative respondent.

**OMAN****M/s Oman Polypropylene LLC**

10.4 The response was perused and it was found that the respondent has provided selling price details of the subject goods for different grades in Appendix 3A and 3B of their response. However, it was noted that the exporter has provided one single cost for all the grades in Appendix 8. In the absence of grade-wise Cost of production data, the Authority is not able to carry out the ordinary course of trade test



on a grade-wise basis. Therefore, the Authority is constrained to determine single Normal value for the subject goods as a whole. It was noted that the weighted average domestic selling price so determined was less than the weighted average domestic cost of production; and it was also noted that the loss making transactions were more than 20% of the total sales; therefore the Authority has proceeded to determine the Normal value based on the profitable sales in terms of the provisions of Annexure I of the AD Rules. The adjustments claimed by the exporter on account of service charges and transportation charges have been provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. It has also been stated that goods sold in the home market are identical to the goods exported to India. The difference, if any, is in supplying material on pallets in Oman whereas the same is supplied without pallets to India. The impact thereof can be taken as \$\*\*\* / MT. The claim has been provisionally accepted, subject to further investigation and spot verification. Thus, the Normal value of the exporter is worked out as USD \*\*\* per MT.

### **SAUDI ARABIA**

#### **M/s Advanced Polypropylene Co.**

10.5 The response was perused and it was noted that the respondent has sold the off-spec material in the domestic market whereas the goods exported to India are of various grades. The details relating to off-spec material sold in the domestic market has been provided in Appendix 1. The Authority notes that the respondent has exported the subjects to India during May 2008 till December 2008, whereas its domestic sales have been made only in November and December 2008 period. Considering the fact that the prices of petroleum products in general and as well as of the subject goods fell significantly during this period when the domestic sales were made; hence the domestic sale made by the respondent cannot be deemed as comparable and representative for the purposes of determination of the Normal value and dumping margin.

Therefore, the Authority has proceeded to construct the normal value on the basis of the unit cost to make and sell as reported in Appendix 8 and added actual profit margin as reported by the respondent subject to further investigation and spot verification. The normal value determined for the exporter is USD \*\*\* per MT.

#### **M/s Saudi Polyolefins Company**

10.6 The response was perused and it was found that the respondent has provided selling price details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. It was noted that the weighted average domestic selling price so determined was more than the weighted average domestic cost of production; and it was also noted that the loss making transactions were less than 20% of the total sales; therefore the Authority has proceeded to determine the Normal value based on total domestic

sales in terms of the provisions of Annexure I of the AD Rules. The adjustments claimed by the exporter on account of inland freight and Credit Cost have been provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. Thus, the Normal value of the respondent is worked out as USD \*\*\* per MT.

**M/s Saudi Basic Industries Corporation (SABIC)**

10.7 The exporter's response was perused and it was noted that SABIC sells the subject goods produced by two related entities namely, M/s IBN ZAHIR and M/s YANPET. The respondent has provided details only in the Appendices 1 & 2, 3A and 3B. No details have been provided in respect of other appendices viz. Appendices 4-9. The exporter stated that they would file full details as required in the above-mentioned appendices by 27<sup>th</sup> April 2009; but the exporter has not submitted these details till date. Under the circumstances, since there is no information on record for the exporter regarding their cost of production, the Authority is unable to carry out the ordinary course of trade (OCT) test.

It was stated that they procure the subject goods from the above two related producers, who have not co-operated in this investigation. As the respondent has not provided any information/data in some of the Appendices, including the detailed cost information and the producers of the subject goods have not co-operated in the investigation, the Authority is constrained to treat the respondent exporter as non-co-operative for the purposes of preliminary findings.

**M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Saudi Arabia**

10.8 The response was perused and it was found that the information/data regarding the domestic sales has not been provided except in Appendices 1, 2 A, 3 A, 3 B and 3 C. The Appendix 1 & 3 B data relates to sales to other countries rather than the domestic sales. Other relevant information has not been provided by the respondent. It was stated that they procure the subject goods from M/s SAUDI YANBU PETROCHEMICAL COMPANY (YANPET), who has not co-operated in this investigation. As the respondent has not provided any information/data in some of the Appendices, including the detailed cost information and the producer of the subject goods has not co-operated in the investigation, the Authority is constrained to treat the respondent exporter as non-co-operative for the purposes of preliminary findings.

**SINGAPORE**

**M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore**

10.9 The response was perused and it was found that the information/data regarding the domestic sales has not been provided, *inter-alia*, stating that the sales in Singapore were \*\*\* MT whereas exports to India were \*\*\* MT. Therefore, as the sales in Singapore were less than 5% of the exports to India, the Normal value is

regarded to be determined based on third country information. The Authority found that the information/data provided in this regard at different places of the response was inconsistent with each other.

10.10 Reference in this regard is invited to the provisions of the Custom Tariff Act and the AD Rules made there under which, *inter-alia*, lay down the modalities for determination of Normal value. In view of these provisions and the interpretation thereof by the Hon'ble Supreme Court in the *Haldor topsoe* case, the Authority is of the view that no discretion lies with the exporters to choose the option of the determination of the Normal Value, if the Normal value is not to be based on the domestic sales criteria. Rather, the choice lies with the Authority to do so. Therefore, the Authority has considered it appropriate to construct the Normal value for the respondent on the basis of facts available.

10.11 Besides, it is also seen that the respondent has not provided any meaningful information/data in different Appendixes, including the detailed cost information. However, information regarding the manufacturing unit cost has been provided in relevant Appendixes. Therefore, the Authority has proceeded to construct the Normal value on the basis of information provided by the exporter to manufacture the subject goods after adding a reasonable profit margin of \*\*\*% thereto and compared the same with the information provided in Appendix 3A wherein the export price of the subject goods to India at ex-factory level has been mentioned, subject to further investigation and spot verification. Thus, the Normal value of the exporter is worked out as USD \*\*\* per MT.

**M/s The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.**

10.12 The response was perused and it was noted that M/s Polyolefin is a producer of the subject goods and is not directly exporting the goods to India. M/s Sumitomo Corporation, M/s Toyota Tsusho (Singapore) Pte. Ltd., M/s Marubeni Chemical Asia Pacific Pte. Ltd. and M/s Itochu Plastics Pte. Ltd. have exported the subject goods to India produced by M/s Polyolefin. These four exporters have also given their responses to the exporters' questionnaire.

10.13 The Authority notes that the producer has not given the details for the ex-factory cost for the domestic market in the Appendix 8 B. The producer has also not provided any meaningful details in the costing Appendixes i.e. Appendixes 5, 6, 7, 8, 8 A, 8 B and 9. In the absence of the relevant data, the Authority is not in a position to carry out the ordinary course of trade (OCT) test. The Authority, is therefore, constrained to determine the Normal value for the producer by adopting the relevant data of other co-operating respondent from Singapore, subject to further investigation and spot verification. The Normal value for the producer is, thus, worked out as USD \*\*\* per MT.

**M/s Sumitomo Chemical Asia Pte Ltd**

10.14 It has been stated that Sumitomo Chemical Co Ltd of Japan ("SCC") wholly owns Sumitomo Chemical Asia Pte Ltd ("SCA"). SCA is an exclusive distributor of the chemical products (including polypropylene) produced by Rabigh Refining and Petrochemical Company ("PRC") of Saudi Arabia, which is \*\*\*% owned by SCC. It was also stated that polypropylene was purchased from The Polyolefin Company (Singapore) Pte Ltd.(TPC). However, as per the submissions made by TPC separately in their response, it has been stated by them that they are handling exports in India through five different business entities. The respondent's name, viz. Sumitomo Chemical Asia Pte Ltd is not one of them.

10.15 It has been contended by the exporter that although Singapore is the domestic market, the sales recorded was extremely small in quantity and value. Therefore, its sales data would not permit a proper basis for the Normal Value. On the other hand, the sales data for China was more significant in quantity and (nearly two-thirds of SCA's total volume sold) and value, so that it can be used as a basis for the Normal Value for the sales by SCA into India. In addition, the shipment terms to China were comparable to those to India.

10.16 The Authority, however, notes that M/s Rabigh Refining and Petrochemical Company ("PRC") of Saudi Arabia, the producer has not co-operated in the investigation. Since the exporter and the producer being related entities, it would not be possible to determine that the transactions between the two entities are at arm's length. It cannot also be assumed that the procurement of the subject goods by Sumitomo Chemical Asia Pte Ltd has been made in the ordinary course of trade. As the producer of the subject goods has not co-operated in the investigation, the Authority is constrained to treat the respondent exporter as non-co-operative for the purposes of preliminary findings.

## **G. EXPORT PRICE**

### **OMAN**

#### **M/s Oman Polypropylene LLC**

11. The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed adjustments on account of commission, service charge, insurance, freight and inland transportation and the same are provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. The Authority also notes that the exporter has not claimed adjustment on account of credit cost and bank charges. However, while the Authority has not made any adjustment on account of these factors at this stage but would look into these

aspects during the course of the investigation. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

### **SAUDI ARABIA**

#### **M/s Advanced Polypropylene Co.**

11.1 The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed adjustment on account of internal freight and handling charges and the same are provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. The Authority also notes that the sales to India are on FOB basis. Therefore, there would be no adjustments for ocean freight and insurance charges. The Authority also notes that the exporter has not made adjustment on account of credit cost and bank charges. However, while the Authority has not made any adjustment on account of these factors at this stage but would look into these aspects during the course of the investigation. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

#### **M/s Saudi Polyolefins Company through NPMAC / BPC**

11.2 The information/data submitted by the respondents is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed adjustment on account of inland freight, overseas freight, clearance & handling charges and Credit Cost; and the same are provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. However, while the Authority has not made any adjustment on account of other factors at this stage but would look into these aspects during the course of the investigation. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

### **SINGAPORE**

#### **M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore**

11.3 The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed adjustments on account of commission, packing, and ocean freight and the same are provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. The Authority also notes that the exporter has not claimed adjustment on account of credit cost, bank charges, clearance charges etc. However, while the Authority has not made any adjustment on account of these factors at this stage but would look into these aspects during the course of the investigation. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

**M/s Mitsubishi Chemical Thailand (Co.) Ltd.**

11.4 The Authority notes that the exporter is a trader and sells the subject goods to India produced by M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore. The exporter has also provided its response to the exporter's questionnaire. The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. It is noted that the exporter in Appendix 2 has given details of gross value only and has not provided any details for the adjustments on account of different expenses such as commission, rebate, credit cost, ocean freight, bank charges, inland transportation etc. The Authority has, therefore, provisionally taken the charges as incurred by another exporter from Singapore. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

**M/s Sumitomo Corporation Asia Pte. Ltd.**

11.5 The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed adjustment on account of commission, credit cost, bank charges, terminal handling charges and margin of SCAS and the same are provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. The Authority also notes that the exporter has not mentioned whether the sales made to India are on CIF basis or FOB basis. However, from the response of the producer i.e. M/s The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd., the Authority notes that the sales to India are on CIF basis. Therefore, the Authority has no option but to proceed to convert these CIF prices to ex-procurement / ex-factory price on the basis of the adjustments mentioned in the application, particularly in the context that these adjustments are on a much higher side as per the submissions of the another exporter from Singapore. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

**M/s Toyota Tsusho (Singapore) Pte. Ltd.**

11.6 The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed a consolidated adjustment on account of commission, rebate, credit cost, ocean freight and inland transportation and did not provide the separate figure for each adjustment. The Authority, however, has provisionally accepted the abovementioned adjustments subject to further investigation and spot verification. The Authority also notes that the exporter has not claimed adjustment on account of bank charges. However, while the Authority has not made any adjustment on account of bank charges at this stage but would look



into these aspects during the course of the investigation. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

**M/s Marubeni Chemical Asia Pacific Pte. Ltd.**

11.7 The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has not detailed any adjustment in the appendix 2 for the different expenses such as commission, rebate, credit cost, ocean freight, bank charges, inland transportation etc. The Authority has, therefore, provisionally taken the charges as incurred by another exporter from Singapore. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

**M/s Itochu Plastics Pte. Ltd.**

11.8 The information/data submitted by the exporter is being relied upon provisionally for the determination of the export price subject to further investigation and spot verification. The exporter has claimed adjustments on account of commission and credit cost and the same are provisionally accepted subject to further investigation and spot verification. The Authority also notes that the exporter has stated that the expenses relating to sales to India are borne by the producer. However, while the Authority has not made any adjustment on account of these expenses at this stage but would look into these aspects during the course of the investigation. Thus, the Authority has determined the export price for the exporter as USD \*\*\* per MT.

**H. DUMPING MARGIN**

12. Considering the Normal values and Export prices as determined above, the dumping margins have been determined as follows:

Name	Country	Dumping Margin	
		USD / MT	%
M/s Oman Polypropylene LLC.	Oman	***	29.31%
Non-cooperative Producers and Exporters	Oman	***	243.70%
Sumitomo Corporation Asia Pte. Ltd.	Singapore	***	12.26%
M/s Toyota Tsusho (Singapore) Pte. Ltd.	Singapore	***	27.61%

M/s Marubeni Chemical Asia Pacific Pte. Ltd.	Singapore	***	5.08%
M/s Itochu Plastics Pte. Ltd.	Singapore	***	53.59%
M/s Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore	Singapore	***	12.42%
M/s Mitsubishi Chemical Thailand (Co.) Ltd.	Singapore	***	12.02%
Non-cooperative Producers and Exporters	Singapore	***	235.35%
Advanced Polypropylene Co.	Saudi Arabia	***	53.59%
M/s Saudi Polyolefins Company	Saudi Arabia	***	1.89%
Non-cooperative Producers and Exporters	Saudi Arabia	***	185.68%

## I. INJURY

### Cumulative assessment

13. The analysis shows that the subject goods are being dumped into India from the subject countries. Attention is invited to Annexure II para (iii) of the AD Rules which provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -

- the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the import of like article or where the export of individual countries is less than three per cent, the imports collectively accounts for more than seven per cent of the import of like article and
- cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

#### 13.1 The Authority observes that

- The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed above;
- The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed;



- iii. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market. This is evident from the fact that the domestic product and imported product are like Article; imports from each of the subject countries are significant; goods produced by the Indian Producers and imported from subject countries are in direct competition; common parties are resorting to use of imported material and domestic material; Indian Producers' customers are using domestic material and imported material; the exporters from the subject countries and the applicant have sold the same product in the same periods to the same set of customers, etc.

13.2 In view of the above, the Authority considers it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from the subject countries.

13.3 Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such product. While examining the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

13.4 As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows.

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."*

#### **Submissions made by the interested parties**

13.5 The submissions made by the exporters/importers and other interested parties are summarized as follows to the extent they have been found to be relevant for the purpose of these Preliminary Findings. It has been, *inter alia*, stated that:

- (i) The market share of the Indian industry has increased from 91.34% in 2005-06 to 92.16% during POI. Hence, it cannot be said that the imports from the subject countries have taken over the entire increase in demand and the fall in domestic industry market share is due to the increase in imports.
- (ii) Domestic industry has claimed that the capacity utilization has come down over the injury investigation period due to the severely dumped imports from subject countries. In this regard, it should be noted that the Reliance Industries Ltd. has informed BSE India that it has closed some of its polyester plants for routine maintenance and enhancing product capabilities during the month of Nov'08 and repair for approximately four weeks. Due to this, the capacity utilization has come down during the period of investigation.
- (iii) The domestic industry has claimed that it has suffered loss during the Oct-Dec'08 as compared to the April-June '08 due to the increase in the imports. In this regard, it should be noted that the Reliance Industries has informed that its Patalganga site had announced a voluntary retirement scheme on October 05, 2008 as part of its normal cost optimization exercise and over 400 people had opted for the same.
- (iv) There is no fall in the sales value as well as volume during the period of investigation as sales volume has increased from 100 indexed units in 2005-06 to 131 indexed annualized units in 2008-09. An analysis of the increase in the sales quantity and sales value indicates that the sales realization per MT has also increased as increase in sales value is more than the increase in sales volume.
- (v) The Applicant admits that there is no negative impact on the number of employees and wages paid to them over the injury investigation period. Thus, there is no adverse impact on this factor also.

#### **Submissions made by the domestic industry**

13.6 The domestic industry has stated the following:

- (i) As regards the issue of Market Share, the interested parties have failed to appreciate that the Domestic Industry has filed the application exactly in the prescribed format and the submissions with regard to the injury are also in line with the legal provisions with regard to injury analysis. The Domestic Industry has submitted that its market share has declined. It has not been their claim that the share has declined after taking into account the sales of the other producer. The allegation of making false and misleading claims is, therefore, baseless. Besides, the market share movement in either case (i.e., after or before including the entire domestic producers) is not very significant on the basis of the data available to the Domestic Industry in public domain. It has been reiterated that the actual quantum of imports is much higher once the actual import data is made available to the Designated Authority.

- (ii) As regards the submission of the interested parties that the output and capacity utilization has come down due to the planned shutdown at RIL, it has been submitted that:
- a) The shutdown was only at the Jamnagar complex whereas RIL has as many as five production facilities.
  - b) The month-wise inventory position of the product under consideration shows that the inventories had gone up from \*\*\* MT in April 2008 to \*\*\* MT at the end of September 2008, which further rose to \*\*\* MT at the end of October 2008. Thus, there was an increase in the closing stocks of more than two times from April to October 2008.
  - c) The rise in the inventories led to serious practical problems in storing their goods inasmuch as there was a paucity of physical space for storage of goods on account of the increased imports on dumped prices. It was in this context that a planned shutdown was advanced as RIL was unable to sell the product in the domestic market due to surge in imports at dumped prices.
  - d) As regards the contention of the interested parties that the loss was on account of the "planned" shutdown, it is submitted that the number of days which can be attributed to a maintenance shutdown is less than one day. As explained above, the shutdown for the rest of the period was necessitated due to a huge and unmanageable build-up of inventories at Jamnagar complex. In support of their contention that the number of days of shutdown attributable to planned maintenance, the details of the planned maintenance shutdown over the years needs to be seen.
  - e) The typical maintenance shutdown over the years has been less than 7 days spread over the full year which can be easily verified by the Authority from the detailed daily records being maintained in their plants. Therefore, the contention that that the production and capacity utilization has suffered on account of the planned shutdown is completely misplaced. It is apparent from the records that the shutdown was on account of the burgeoning inventories and the dumped imports.
- (iii) As regards the Voluntary Retirement Scheme at Patalganga, it is submitted that the contention of the interested parties is baseless as no Polypropylene is produced in the Patalganga complex and the costs associated with the voluntary retirement scheme, howsoever small, are also not connected with the production of the subject goods i.e., Polypropylene.
- (iv) As regards sales volume and sales value, price effect and the claim of the Domestic Industry that prices have not increased commensurate to the increase in the costs, the Domestic Industry has submitted that the interested parties have analyzed the indexed numbers to arrive at some self-serving conclusions. The

actual numbers given by the Domestic Industry in their application clearly prove the point of the Domestic Industry that the increase in costs has not been covered by the increase in prices during the period of investigation.

- (v) As regards the inventories, it has been submitted that they have provided the basic information in Proforma IVA as per the prescribed format which calls for the point to point information on stocks. The monthly stocks position of the Domestic Industry given along with the Part VI information clearly demonstrates that the inventories of the Domestic Industry rose to an unprecedented level during the months of September and October and thereafter the stock level came down after the Domestic Industry had no option but to liquidate their stocks at loss. This fact is clearly reflected in the financial performance of the Domestic Industry which shows that the Domestic Industry had suffered losses during October-December 2008 as compared to the period April-September 2008.
- (vi) The information on the profitability provided in the table on page 14 is consistent with the Proforma IV A.

### **Examination by the Authority**

13.7 The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and the arguments of the interested parties.

#### **i Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic industry**

The details relating to imports from all the subject countries and other countries are given below in the following table:

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI (Annualised)
Imports from Subject Countries (MT)	63159	70454	114022	103677
Imports (Other Countries) MT	53383	46814	79111	35033
Total Imports (MT)	116542	117268	193132	138711
Trend in imports from subject countries	100	111	181	164
Trend in Imports from other countries	100	88	148	66
Trend in total Imports	100	101	166	119

Total Demand (MT)	1345762	1534137	1765778	1769783
% Share of Subject Countries in demand	5%	5%	6%	6%

It is noted that the imports from subject countries in absolute terms have increased from 100 (2005-06) to 164 in POI over the injury investigation period. At the same time, the imports from other countries have declined from 100 in the base year to 66 in the period of investigation. The imports in relation to total demand in India have also increased over the injury investigation period particularly during POI from 5% in the base year to 6% in POI.

## ii. Demand and Market share

The Authority notes that there are only two known producers of the like articles in the country, one of whom is the petitioner who is the domestic industry. The trends in the sales of the domestic industry were rising till 2007-08 but fell during POI. At the same time, the sales of the other producer continued on rise even during POI. Notwithstanding this, the demand for product under consideration went up nearly by 32% over the base year. In a scenario of rising demand, the market share of imports from subject countries remained in the range of 5% to 6% and, therefore, the market share of the domestic industry improved.

This, however, needs to be seen with a caveat. There is always a choice with a business entity to either retain the market share by reducing the sales realisation or to lose the market share by retaining the sales realisation. It appears that the domestic industry has chosen to retain the market share at the cost of its sales realisation.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI (Annualised)
Domestic Industry Sales (MT)	***	***	***	***
Sales of Other Domestic Producer	***	***	***	***
Total Domestic Sales in India (MT)	1229221	1416870	1572646	1631072

Imports from Subject Countries (MT)	63159	70454	114022	103677
Imports from Other Countries (MT)	53383	46814	79111	35033
Total Imports (MT)	116542	117268	193132	138711
Total Demand (MT)	1345762	1534137	1765778	1769783
Market Share of Total Domestic Sales in demand	91%	92%	89%	92%
Market Share of Imports from Subject Countries in demand	5%	5%	6%	6%
Market share of Imports from other countries	4%	3%	5%	2%

### iii. Capacity, production & capacity utilization

The details for the capacity and production for the injury investigation period are given in the following table

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI (Annualised)
Capacity (MT)	1400000	1700000	1700000	1700000
Production (MT)	1285511	1639199	1710002	1517688
Capacity Utilization%	92%	96%	101%	89%

It is noted that the capacity utilization of the domestic industry was rising till 2007-08 when it was able to use full capacity but it fell drastically during POI i.e. from 101% (2006-07) to 89%. In short, capacity utilization of the domestic industry during POI has come down as compared to both base year 2005-06 as well as previous year primarily due to plant shut down at Jamnagar.

The domestic industry has claimed that the plant was primarily shut down on account of burgeoning inventory levels during the months of September and October and thereafter the stock level came down because the Domestic Industry liquidated their stocks at loss.

#### iv. **Sales**

As noted earlier, the product under consideration has witnessed rising demand in the country and domestic industry was able to enhance its sales volume in tandem with increase in demand. In fact, domestic industry enhanced its capacity during 2006-07 by over 20%.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI (Annualised)
Total Sales Volume (MT) – Domestic	***	***	***	***
Sales Value (Rs Lacs) – Domestic	***	***	***	***
Indexed	100	135	155	166

#### v. **Effect of Dumped Imports on domestic prices**

The Authority notes that the landed value from subject countries over the injury investigation period has increased from 100 (Base year 2005-06) to 131 during POI. The trends in the selling price of the domestic industry show similar rising trends. The landed prices of imports from subject countries have always been higher than the domestic selling prices of the domestic industry and hence imports were not undercutting the prices of the domestic industry. During 2007-08, both the landed prices and domestic selling prices were higher by 17% over base year 2005-06. During POI, while the landed prices were higher by 12.5% over 2007-08, the domestic selling prices could go up only by 9%. Domestic industry has however, claimed that increase in the selling prices of the domestic industry could not be commensurate with increase in cost. The trends in increase in cost vis-à-vis corresponding

increase in selling prices show that domestic industry has suffered price-suppression.

Since there has been negative price undercutting throughout the injury period, the domestic industry was asked to clarify as to why they could not raise its domestic selling prices at least to the level of the landed prices of the alleged dumped imports. The Domestic industry responded by alleging that the exporters have extended heavy discounts post-shipments, for which the domestic industry has submitted a few documents supporting the allegation. However, this aspect will be cross-checked during the course of the investigation and exporter's verification.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI
Landed Value Rs. / MT	51687	59386	60370	67940
Indexed	100	115	117	131
Net Domestic Selling Price Rs. / MT	***	***	***	***
Indexed	100	114	117	127
Cost Rs. / MT	***	***	***	***
Indexed	100	109	112	148

vi. **Price Undercutting**

The Authority notes that there is a negative price undercutting for each of the subject countries throughout the injury period. The Domestic industry has alleged that the exporters have extended heavy discounts post-shipments, for which the domestic industry has submitted a few documents supporting the allegation. Considering the claims made by the domestic industry regarding post-shipment discounts offered by the exporters/producers of the subject goods from subject countries; there appears to be a rationale for the same as the domestic industry claims to have kept its sales realisation considering the market scenario impacted due to these post-shipment discounts. However, the claims and counter-claims relating to post-shipment discounts would be cross-checked during the course of the investigation and spot verification.

vii. **Price Underselling**

The Authority notes that there is a positive price underselling for each of the subject countries. The details relating to the price underselling are given in the following table:



**Price Underselling**

	<b>POI</b>
<b>Desirable Selling Prices (Rs./MT)/NIP</b>	***
<b>Landed Value (Rs./MT)</b>	
<b>Subject Countries</b>	67940
Oman	67113
Saudi Arabia	66383
Singapore	70236
<b>Price Underselling (Rs./MT)</b>	
<b>Subject Countries</b>	***
Oman	***
Saudi Arabia	***
Singapore	***
<b>Price Underselling (%)</b>	
<b>Subject Countries</b>	***
Oman	***
Saudi Arabia	***
Singapore	***
<b>Price Underselling (%) - Ranges</b>	
<b>Subject Countries</b>	5 - 10
Oman	5 - 10
Saudi Arabia	5 - 10

Singapore	2 - 5

### viii. Profitability

The details relating to profitability are given in the following table.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI (Annualised)
Total Sales (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	118	133	131
Sales Value (Rs Lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	135	155	166
Selling Price/Unit	***	***	***	***
Indexed	100	114	117	127
Cost (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Cost /Unit	***	***	***	***
Indexed	100	109	112	148
Profit/MT	***	***	***	***
Indexed	100	141	140	20

The Authority notes that the profitability of the domestic industry has been adversely affected during the period of investigation. During the Period of investigation, while the cost of Sales was 148 (indexed) as compared to 100 in the period 2005-06 but the selling prices could rise only from 100 to 127 during the corresponding period. In short, the domestic industry could not raise the prices commensurate with the increase in the costs during the period of investigation; as a consequence thereof there was a sharp decline in the profitability. The decline in profitability of the domestic industry is more severe as compared to immediate

previous year. The trend analysis demonstrates significant price suppression during the period of investigation.

**ix. Return on capital employed**

It is noted that the ROCE of the domestic industry has also drastically come down over the injury investigation period.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI
Capital Employed	***	***	***	***
Profit Before Interest	***	***	***	***
ROCE (%)	***	***	***	***
Indexed	100	145	182	30

**x. Cash Flow**

The Authority notes that the cash flow position of the domestic industry deteriorated during the period of investigation and followed the same trend as that of profitability and ROCE.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI
Profit/ Loss (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Add: Depreciation (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Cash Flow (In Rs. Lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	155	169	48

**xi. Employment and Wages**

It is noted that the number of employees as well wages have increased over the injury investigation period.

**xii. Productivity**

The productivity per employee has also increased over the injury investigation period. It is noted that productivity is not a cause of injury to the domestic industry.

**xiii. Growth**

It is noted that the demand in the country has increased during the injury investigation period whereas the market share of the domestic industry has come down over the same period. The capacity utilization, profitability, ROCE and cash flow have also deteriorated over the injury investigation period. It indicates that the growth the domestic industry has been affected.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI (Annualised)
Growth as compared to the base year				
Demand	100	114	131	132
Cash Profit	100	155	169	148
Return on capital employed	100	145	182	30

**xiv. Inventory**

Based on the data contained in the application, the Authority notes that average inventories have declined from 100 (Base year 2005-06) to 73 in POI showing an improved off-take.

	2005 - 2006	2006 - 2007	2007 - 2008	POI
Opening Stock (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	136	153	132
Closing Stock (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	112	97	29
Average Stock	***	***	***	***

(MT)				
Indexed	100	122	121	73

The domestic industry has subsequently submitted month-wise stock position, which clearly demonstrates their claim that inventories had piled up significantly during the months of September and October and thereafter the stock level came down because the Domestic Industry liquidated their stocks at loss.

Months	Closing Stocks	Indexed
April 2008	***	100
May 2008	***	83
June 2008	***	61
July 2008	***	100
August 2008	***	142
September 2008	***	158
October 2008	***	204
November 2008	***	71
December 2008	***	29

**xv. Ability to raise capital / investment**

The Authority notes that the domestic industry has increased its capacity. The capacity increase was last effected in the year 2006-07. The Authority also notes that since the demand of the subject goods in India is rising and is more than the capacity of the domestic industry, the imports are inevitable when domestic industry is also exporting the subject goods. But that does not mean that such imports should be at dumped prices.

In a scenario of demand outstripping the domestic capacity, the domestic industry would be keen to increase capacity. However, the profitability parameters do not favourably support that the domestic industry would be able to raise capital from market for investments.

**Conclusion on material injury**

13.8 As regards the volume of the dumped imports, in terms of Article 3.2 of the WTO's Anti-dumping Agreement and para (ii) of Annexure II of the AD Rules, it is an

obligation of the Authority to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in the importing Member. However, this cannot be analysed in isolation, because it is common practice of business entities to take impact of any competition either on its market share or on its sales realisation. Apparently, the domestic industry in the instant matter has chosen to take the impact on its sales realisation. As regards the effect of the dumped imports on prices, the Authority has to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of a like product of the importing Member, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. It is to be noted that no one or several of these factors can necessarily give decisive guidance.

13.9 The Authority notes that neither the WTO's Agreement on Antidumping nor the Municipal Law envisages that the domestic industry should first incur losses before approaching the designated authority for relief under antidumping provisions. Besides, the Authority notes that an injury analysis is essentially a trend analysis and no single factor in this analysis can be construed as decisive for the determination of injury to the domestic industry.

13.10 It is seen that there is a negative price undercutting in the instant matter. But the Domestic industry has alleged that the exporters have extended heavy discounts post-shipments, for which the domestic industry has submitted a few documents supporting the allegation. Considering the claims made by the domestic industry (as indicated in sub-para v of para 13.7 of these findings) regarding post-shipment discounts offered by the exporters/producers of the subject goods from subject countries; there appears to be a rationale for the same as the domestic industry claims to have kept its sales realisation considering the market scenario impacted due to these post-shipment discounts offered by the exporters from the subject countries. These claims and counter-claims relating to post-shipment discounts, however, would be cross-checked during the course of the investigation and spot verification.

13.11 The Authority notes that the domestic industry has suffered material injury on account of significant price suppression thereby adversely affecting profitability, ROCE and Cash Flow. The price underselling is also seen to be significant. Further, if the allegations of the domestic industry regarding post-shipments discounts turn out to be true during further investigation, there is likelihood of positive price undercutting as well.

13.12 It is also seen that the domestic industry could retain its market share at the cost of its sales realization. During the period of investigation, while the cost of sales was 148 (indexed) as compared to 100 in the year 2005-06 but the selling prices could rise only from 100 (2005-06) to 127 during the POI. In short, the domestic industry could not raise the selling prices commensurate with the increase in costs and as a consequence thereof there was a sharp decline in the profitability. The profitability of the domestic industry has significantly deteriorated to the level below the reasonable levels though it continues to make a little profit. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered

material injury. As regards the threat of material injury claims, the Authority would examine the same during the course of the investigation.

#### **J. CAUSAL LINK**

14. It was examined whether other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was found as follows:

- a) Imports from Third Countries: - The imports of subject goods from sources other than the subject countries except Korea are de minimis during the period of investigation. However, the prices from Korea are more than the prices offered by the subject countries.
- b) Contraction in Demand: - It is noted that there is no contraction in the demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased by 32% over the injury investigation period.
- c) Pattern of consumption: - No significant change in the pattern of consumption is observed.
- d) Conditions of competition: - The applicant has claimed that conditions of competition or trade restrictive practices are not responsible for the claimed injury to the domestic industry. No interested party has refuted this claim.
- e) Developments in technology: - The applicant has claimed that there is no significant change in technology, which could have caused injury to the domestic industry.
- f) Export performance of the domestic industry: - The export performance of the domestic industry in no way has affected the financial and economic situation of the petitioner in the domestic market. The injury analysis in the preceding paragraphs does not include the figures for export.

14.1 The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

- a. Imports from subject countries have increased in absolute terms as well as in relation to total imports, total demand and domestic production in India.
- b. Market share of the domestic industry has come down over the period of investigation while the demand increased.
- c. The prices of the domestic industry have been suppressed despite increase in demand.

- d. There is a significant dumping margin from each of the subject countries and also there is a significant price underselling from each of the subject countries.

14.2 From the above, it appears that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

**K. Conclusions:**

15. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority provisionally concludes that:

(a) The product under consideration has been exported to India from the subject countries below associated Normal values.

(b) The domestic industry has suffered material injury in the product under consideration.

(c) The material injury has been caused by the dumped imports from the subject countries.

**L. Indian industry's interest & other issues**

16. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

16.1 It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

**M. Recommendations**

17. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having provisionally established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of



the view that imposition of provisional duty is required to offset dumping and injury pending completion of the investigation. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends imposition of provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of 'injury', so as to remove the 'injury' to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty as per amount specified in Col 8 of the table below is recommended to be imposed from the date of the notification to be issued by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries.

Sl. No	Heading / Subheading	Description of goods	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Oman	Oman	M/s Oman Polypropylene LLC	M/s Oman Polypropylene LLC	Nil	MT	US \$
2	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Oman	Oman	Any combination other than as specified at Sr. No.1		977.67	MT	US \$
3	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Oman	Any other than Oman	Any	Any	977.67	MT	US \$
4	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Any country other than countries attracting Anti-dumping duty	Oman	Any	Any	977.67	MT	US \$
5	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Advanced Polypropylene Co.	Advanced Polypropylene Co.	440.48	MT	US \$
6	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Saudi Polyolefins Company	National Petrochemical Industrialization Marketing company/ Basell	Nil	MT	US \$

						Polyolefins company			
7.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Any combination other than as specified at Sr. No.5 and 6		820.55	MT	US \$
8.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Saudi Arabia	Any other than Saudi Arabia	Any	Any	820.55	MT	US \$
9.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Any country other than countries attracting Anti-dumping duty	Saudi Arabia	Any	Any	820.55	MT	US \$
10.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.	Sumitomo Corporation Asia Pte. Ltd.	81.20	MT	US \$
11.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.	Toyota Tsusho. (Singapore) Pte.	119.32	MT	US \$
12.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.	Marubeni Chemical Asia Pacific Pte. Ltd.	Nil	MT	US \$
13.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	The Polyolefin Company (Singapore) Pte. Ltd.	Itochu Plastics Pte. Ltd.	472.29	MT	US \$
14.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	Exxon Mobil Chemical Asia Pacific	Exxon Mobil Chemical Asia Pacific	44.43	MT	US \$
15.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	Exxon Mobil Chemical Asia Pacific, Singapore	Mitsubishi Chemical Thailand (Co.) Ltd.	Nil	MT	US \$
16.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)'	Singapore	Singapore	Any combination other than as specified at Sr. nos.10-15.		1033.65	MT	US \$

		ethylene)							
17.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)	Singapore	Any other than Singapore	Any	Any	1033.65	MT	US\$
18.	39021000 and 39023000	'Polypropylene (i.e., homo-polymers of propylene and copolymers of propylene and ethylene)	Any country other than countries attracting Anti-dumping duty	Singapore	Any	Any	1033.65	MT	US\$

#### N. Further Procedure

18. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings: -

(a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;

(b) Exporters, importers, the applicant and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the these Preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;

(c) The Authority would hold a hearing to hear the views of various interested parties orally;

(d) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;

(e) The Authority would disclose essential facts as per the AD Rules before announcing final findings.

R. GOPALAN, Designated Authority